धेनु घोटाले का मुख्य आरोपी सलाखों में

आस्था का महाकुंभ बना चारधाम, केदारनाथ में रिकॉर्ड भीड़

दिव्य हिमगिरि

हिमालयी राज्यों की पहली साप्ताहिक पत्रिका

नज़र सब पर

15th ANNIVERSARY

वर्ष 15 | अंक 51 | मूल्य 05 रुपये | 10-16 मई, 2026

बंगाल की सत्ता पर भाजपा के "अधिकारी"

दिव्य हिमगिरि

10-16 मई, 2026

संपादक
डॉ. कुँवर राज अस्थाना

वरिष्ठ संवाददाता
शंभूनाथ गौतम

संवाददाता
पूनम आर्या

विज्ञापन
सुनील सेमवाल

ग्राफिक डिजायनर
देव भट्ट

संवाददाता
हरिद्वार: डॉ. रजनीश गौतम
पौडी: रत्नमणि भट्ट
कोटद्वार: के.पी. बौंठियाल
रूद्रपुर: हेमचन्द्र बुडलाकोटी
चमोली: मुकेश रावत
रुड़की: श्रीगोपाल नारसन
नैनीताल: शीतल तिवारी
अल्मोड़ा: संजय कुमार अग्रवाल (एड.)
विकासनगर: अजय शर्मा
प्रसार: रमेश सिंह रावत

संपादकीय कार्यालय : 6, म्युनिसिपल रोड, बाला हिसार स्कूल के सामने, डालनवाला देहरादून (उत्तराखंड)
मोबाइल : +91 8433456398, 9410353164
Email: divyahimgiriddn@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक कुँवर बहादुर अस्थाना द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून से मुद्रित तथा 39/7 ई, ई. सी. रोड, (निकट मार्शल स्कूल सीनियर विंग) देहरादून-248001 उत्तराखण्ड से प्रकाशित।
संपादक: कुँवर बहादुर अस्थाना*
*(पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के लिए उत्तरदायी)

क्या फल-सब्जियां अब मौत परोस रही हैं?

स्वस्थ जीवन के लिए फल और हरी सब्जियों का सेवन हमेशा से जरूरी माना गया है। डॉक्टर और स्वास्थ्य विशेषज्ञ भी लोगों को संतुलित आहार में ताजे फल एवं सब्जियां शामिल करने की सलाह देते हैं। लेकिन विडंबना यह है कि जिन खाद्य पदार्थों को स्वास्थ्य का आधार माना जाता है, वही अब धीरे-धीरे लोगों के जीवन के लिए खतरा बनते जा रहे हैं। खेती और बाजार व्यवस्था में मुनाफाखोरी की बढ़ती प्रवृत्ति ने फलों और सब्जियों को जहरीले रसायनों के सहारे तैयार करने की खतरनाक संस्कृति को जन्म दे दिया है। हाल ही में मुंबई के पायधोनी इलाके में सामने आया मामला इस गंभीर संकट की भयावह तस्वीर पेश करता है। तरबूज खाने के बाद एक ही परिवार के चार सदस्यों की मौत ने पूरे देश को झकझोर दिया। फोरेंसिक जांच में मृतकों के शरीर और तरबूज के नमूनों में चूहे मारने की दवा के अंश मिलने से यह मामला और भी चिंताजनक बन गया है। पुलिस अब यह पता लगाने में जुटी है कि आखिर यह जहरीला पदार्थ तरबूज तक पहुंचा कैसे। आशंका जताई जा रही है कि कहीं फल को जल्दी पकाने या उसे सुरक्षित रखने के नाम पर खतरनाक रसायनों का इस्तेमाल तो नहीं किया गया। यह घटना केवल एक परिवार की त्रासदी नहीं, बल्कि उस अव्यवस्थित और लापरवाह खाद्य तंत्र की चेतावनी है, जहां उपभोक्ताओं की सेहत से खुला खिलवाड़ किया जा रहा है। आज बाजार में बिकने वाले कई फल और सब्जियां प्राकृतिक तरीके से तैयार नहीं किए जाते, बल्कि कृत्रिम रसायनों के सहारे उन्हें समय से पहले पकाया और आकर्षक बनाया जाता है। कहीं कैल्शियम कार्बाइड से फल पकाए जाते हैं, तो कहीं सब्जियों का आकार तेजी से बढ़ाने के लिए इंजेक्शन के जरिए रसायन डाले जाते हैं। इन पदार्थों का असर धीरे-धीरे शरीर के भीतर जहर की तरह फैलता है और कैंसर, किडनी रोग, हार्मोन असंतुलन तथा अन्य गंभीर बीमारियों को जन्म दे सकता है। विडंबना यह है कि कीटनाशकों और रसायनों के उपयोग को नियंत्रित करने के लिए नियम तो बनाए गए हैं, लेकिन उनके पालन की स्थिति बेहद कमजोर है। खेतों से लेकर मंडियों तक निगरानी का अभाव साफ दिखाई देता है। कई बार किसान जानकारी के अभाव में अधिक मात्रा में रसायनों का प्रयोग कर देते हैं, जबकि कुछ व्यापारी मुनाफे के लालच में जानबूझकर खतरनाक तरीकों को अपनाते हैं। परिणामस्वरूप आम नागरिक अनजाने में जहरीले खाद्य पदार्थों का सेवन करने को मजबूर हो रहा है। यह भी चिंताजनक है कि खाद्य सुरक्षा से जुड़े विभाग अक्सर केवल कागजी कार्रवाई तक सीमित दिखाई देते हैं। नियमित जांच, सैंपलिंग और दोषियों पर सख्त कार्रवाई की कमी के कारण ऐसे मामले लगातार सामने आते रहते हैं। यदि समय रहते इस दिशा में कठोर कदम नहीं उठाए गए, तो लोगों का भरोसा भोजन जैसी मूलभूत आवश्यकता से भी उठ सकता है। सरकार और संबंधित एजेंसियों की जिम्मेदारी केवल नियम बनाने तक सीमित नहीं हो सकती। जरूरी है कि खेतों, मंडियों और बाजारों में नियमित रूप से फल-सब्जियों की जांच की जाए, अवैध रसायनों की बिक्री पर सख्त रोक लगे और दोषियों को कड़ी सजा दी जाए। इसके साथ ही किसानों और व्यापारियों को सुरक्षित एवं वैज्ञानिक खेती के प्रति प्रशिक्षित करना भी उतना ही आवश्यक है। साथ ही उपभोक्ताओं को भी जागरूक होने की जरूरत है। प्राकृतिक और मौसमी उत्पादों को प्राथमिकता देना, फल-सब्जियों को अच्छी तरह धोकर उपयोग करना और संदिग्ध खाद्य पदार्थों से बचना अब समय की मांग बन चुका है। मुंबई की यह दर्दनाक घटना केवल एक आपराधिक जांच का विषय नहीं, बल्कि देश की खाद्य सुरक्षा व्यवस्था के लिए गंभीर चेतावनी है। यदि अब भी व्यवस्था नहीं चेती, तो सेहत के नाम पर हमारी थाली में जहर परोसा जाता रहेगा और निर्दोष लोगों की जान इसी तरह खतरे में पड़ती रहेगी।

डॉ. कुँवर राज अस्थाना

'स्वार्थ' का मार्ग अस्थायी, 'ईमानदारी' का फल स्थायी

राजयोगी ब्रह्माकुमार
निकुंज जी

अंग्रेजी में एक मशहूर कहावत है 'Honesty is Best Policy' अर्थात ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है। व्यवहारिक रूप से यदि सोचा जाए तो 21वीं सदी में जीने वाली आधुनिक पीढ़ी को ईमानदारी की यह नीति कितनी पसंद आती होगी, यह तो हम सभी जानते ही होंगे। क्योंकि आज की दुनिया में ईमानदार होना बड़ा मुश्किल कार्य हो गया हैं। यद्यपि साम, दाम, दंड, भेद की चतुर्विध नीतियाँ एवं नाना प्रकार के आवरणों का प्रयोग करके लोग अपना स्वार्थ साधन तो करते हैं, और ऐसा करके अमुक मात्रा में उन्हें लाभ भी अवश्य होता है और तात्कालिक इच्छा पूर्ति भी हो जाती है परन्तु लम्बी दृष्टि डालकर गम्भीरता पूर्वक यदि विचार किया जाए तो यह प्रतीत होता है की इस प्रकार से प्राप्त की हुई सफलता कभी भी स्थायी नहीं होती और कुछ ही समय बाद उसका पलड़ा उलट जाता है और दूसरे ही परिणाम उपस्थित होने लगते हैं। अत: हमें यह समझ लेना चाहिए की ईमानदारी ही सर्वोत्तम नीति है, क्योंकि उससे जो कुछ भी लाभ होता है वह टिकाऊ और वास्तविक होता है, और अनुभव से यह भी देखा गया हैं की सच्ची सफलता भी ईमानदारों को ही मिलती है। बेईमान आदमियों का कारोबार चार दिन चमक कर अस्त हो जाता है परन्तु ईमानदारी का प्रकाश उस व्यक्ति के मरने के बाद भी बहुत समय तक फैला रहता है। परन्तु हम इस बात को भी नकार नहीं सकते हैं की आज हर कोई बेईमानी के सरल रास्ते पर चलकर अपनी मंजिल पर पहुंचकर अस्थायी खुशी को पाकर खुद को सुखी समझने की महा मूर्खता कर रहा है। परन्तु! ऐसा करने में हम यह भूल जाते हैं की दूसरों के साथ ईमानदार रहना अर्थात उनके साथ साथ स्वयं को भी सम्मान देना। अत: जो औरो से बेईमानी या धोखाधड़ी करता हैं, वह कभी भी अपनी नजरों में ऊपर उठ नहीं सकता। इस सन्दर्भ में एक प्रचलित कहानी है कि - एक राजा ने अपने उत्तराधिकारी के चुनाव के लिए राज्य के नौजवानों को एक-एक बीज दिया और कहा,

इसे गमले में लगाकर सींचना और एक वर्ष बाद मेरे पास लेकर आना। जिसका पौधा सबसे अच्छा होगा उसे राजा बनाया जाएगा। बीज लेकर सब खुशी-खुशी घर लौटे। 5-6 दिन गुजर जाने पर भी जब बीज अंकुरित नहीं हुआ तो सभी ने उसी प्रकार का बीज पौधा-घर से खरीदकर अपने-अपने गमले में लगा दिया और जी-जान लगाकर, खाद-पानी से उसकी संभाल करने लगे। केवल लाली नाम का एक नौजवान ही ऐसा था जो अपने खाली गमले को देख चिंतित तो था पर उसने बाजार से दूसरा बीज खरीदने की बईमानी नहीं कि। निश्चित समय पर सभी ने बड़े-बड़े पौधों वाले गमले राजा के सम्मुख पेश किए, केवल लाली ही एक कोने में डरा-सहमा खड़ा था अपने खाली गमले के साथ। राजा ने उसे अपने पास बुलाया और घोषणा की की लाली ही मेरा उत्तराधिकारी है। जब जनता ने उसके खाली गमले को प्रश्नवाचक नजरों से देखा तो राजा ने भेद खोला की मैंने उबले हुए बीज सभी को दिए थे। लाली पूरा साल उसी उबले बीज को ईमानदारी से सींचता रहा जबकि शेष सभी ने राजाई पाने के लोभ में बीज बदल लिए। ये बड़े-बड़े पौधे इनकी बेईमानी की कहानी कह रहे हैं। जबकि लाली ही एकमात्र ऐसा ईमानदार लड़का है जिसने बीज नहीं बदला और उसी को पुरे वर्ष ईमानदारी से अंकुरित करने का प्रयास करता रहा। बीज तो अंकुरित होना ही नहीं था लेकिन लाली हिम्मत व ईमानदारी से अपना खाली गमला ही मेरे पास लेकर आया। अंत में राजा ने घोषणा की कि हर राज्य की जनता यह उम्मीद करती है की उसका राजा हिम्मत वाला व ईमानदार हो और लाली ने अपनी इसी हिम्मत व ईमानदारी का परिचय दिया है, इसलिए इस राज्य का अगला राजा लाली ही होगा।

इस कहानी की यही शिक्षा है की बुद्धि रूपी जमीन में यदि हम ईमानदारी का बीजा रोपण करेंगे तो उसे सींचने पर विश्वास रूपी मीठे फल निकलेंगे। स्मरण रहे! अच्छाई का बीज सींचने पर अच्छे मित्रों की प्राप्ति होगी तथा नम्रता का बीज डालने पर महानता रूपी फल निकलेगा। और यदि बेईमानी का बीज डाला तो अविश्वास के कांटे निकलेंगे, स्वार्थ का बीज डाला तो अकेलेपन का अनुभव होगा, पाप का बीज डाला तो अपराध बोध की झंडियाँ उगेगी और लालच करेंगे तो स्वयं का ही नुकसान होगा। इसलिए कौनसा बीज लगाना है, इसकी सावधानी हमें स्वयं रखनी है क्योंकि आज लगाए गए बीज के आधार पर हमें भविष्य की फसल मिलेगी। अत: आज श्रेष्ठ कर्मों के बीज डालेंगे तो भविष्य में अच्छे मीठे फल खायेंगे और बुरे कर्मों के बीज डालने पर भविष्य में उनकी कीमत भी हमें ही चुकानी होगी।

नवीन समाजिक व्यवस्था में मीडिया उत्प्रेरक का कार्य करता है

(मनोज कुमार श्रीवास्तव)
उप निदेशक
प्रभारी मीडिया सेंटर
विधान सभा, देहरादून

मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता सत्यता, निष्पक्षता और सकरात्मकता पर आधारित होती है, इसलिए हम इस बात की प्रतीक्षा न करें कि पहले समाज मूल्यनिष्ठ बने, तब मीडिया मूल्यनिष्ठ बनेगा। जो समाज मांग रहा है, उसे मीडिया प्रस्तुत न करें, बल्कि जो समाज हित में है, उसे मीडिया दिखाये। मीडिया अपने स्वधर्म का पालन करे। दूसरों की हित के साथ-साथ अपने हित को न छोड़े।

चेतन मीडिया का कार्य समाज में सकारात्मकता देना है, जबकि जड़ मीडिया अपने मूल दायित्व को भूलकर व्यवसायिकता के दवाब में यह तर्क देता है कि जो समाज पसन्द करता है, उसे हम दिखाते हैं।

नकारात्मक चीजें आकर्षण पैदा करती हैं। इसकी गति तीव्र होती है, परन्तु अस्थाई होती है, जबकि सकारात्मक तत्व शांति प्रदान करती है, जो स्थाई होकर अधिक आकर्षण पैदा करने की क्षमता रखती है। आज मीडिया में हिंसा, लूट, बलात्कार को प्रमुखता से दिखाया जाता है, लेकिन मूल्यनिष्ठ कार्यक्रम को भी आम समाज पसन्द करता है। एक सर्वे रिर्पोट के अनुसार भारत में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रतिवर्ष 65 हजार करोड़ का विज्ञापन प्राप्त करती है, जबकि अकेले डिस्कवरी चौनल 03 लाख करोड़ का विज्ञापन प्राप्त करता है। इसलिए मीडिया अपने सामाजिक दायित्व की जिम्मेदारी से बच नही सकता है।

मानव की आत्मा की मूल प्रवृत्ति शांति, सद्भाव, प्रेम इत्यादि सकारात्मक भाव स्वरूप है। इसलिए भले ही सतही तौर पर मीडिया की नकारात्मकता को समाज पसन्द करता हो, परन्तु आंतरिक रूप से अन्ततः मूल्यनिष्ठ कार्यक्रम जैसे सकारात्मक समाचार, लेख इत्यादि की चाह रखता है।

यदि समाचार समाज के हित में न हो तो यह खतरे की घंटी है। यह प्रवृत्ति अपने रचियता को ही नष्ट कर सकता है। चेतन मीडिया स्वरूप बनकर मानवता के हित में उपयोग करें। चेतना को बाहरी जड़तत्वों से काटकर सुप्रीम चेतना से जोड़े, ताकि बाहरी दुनिया से संघर्ष करने में जो भी ऊर्जा खर्च हो रही है, उसकी भरपाई होती रहे। ईश्वर की चेतना में रहकर अर्थात् योग में रहकर कर्म करें, तभी हमारा कर्म कुशल और मंगलदायक होगा। अनुभव और अभ्यास के आधार पर हमारी ऊर्जा का प्रभाव होता रहेगा, जब हम शांत चित्त हो जायेंगे, तब अन्य चीजें स्वतः व्यवस्थित हो जायेंगी। *FACE IT FIGHT IT AND FINISH IT.*

कहा जाता है कि संस्कारों की चमक जब मंच पर आती है, तब संस्कृति खुलकर खुशी से ताली बजाती है, अन्यथा ब्रेकिंग न्यूज कब शॉकिंग न्यूज में बदल जाती है, हमें पता ही नहीं चलता है। यदि समाज की अंधी दौड़ में मीडिया दोड़ता रहा, सच, झूठ है अथवा झूठ, सच है, इसमें विभेद करना मुश्किल हो जायेगा।

कॉलेजों में प्रवेश हेतु सीयूईटी परीक्षा अब औचित्यहीन हो चुकी है- डॉ. सुनील अग्रवाल

डॉ. सुनील अग्रवाल

निजी कॉलेज एसोसिएशन उत्तराखंड के अध्यक्ष डॉ. सुनील अग्रवाल ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान को पत्र भेजकर विद्यालयों में प्रवेश की प्रक्रिया को सीयूईटी से मुक्त करने की मांग की है डॉ. अग्रवाल ने कहा की वर्तमान समय में सीयूईटी के माध्यम से प्रवेश प्रक्रिया औचित्यहीन हो चुकी है उन्होंने कहा की प्रवेश परीक्षा की आवश्यकता तब थी जब स्टूडेंट ज्यादा थे और स्टूडेंट के सापेक्ष कॉलेजों में सीटें कम थी तब प्रवेश परीक्षा के माध्यम से प्रतिभावान छात्रों को प्रवेश समय की आवश्यकता थी अब जबकि पूरे देश में प्राइवेट विश्वविद्यालयों की भरमार हो चुकी है ऐसे में कॉलेजों में छात्रों का अभाव हो चुका है और कॉलेजों की विभिन्न कोर्स की सीटें अक्सर खाली रह जाती हैं और फिर सीयूईटी परीक्षा के बाद मेरिट के आधार पर छात्रों का प्रवेश होता है इससे समय की बर्बादी होती है और छात्रों में असमंजस का भाव बना रहता है इसलिए वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए मेरिट के आधार पर प्रवेश प्रक्रिया जारी होनी चाहिए जिससे छात्रों का प्रवेश समय पर हो सके और छात्रों के समय और धन की बर्बादी ना हो डॉ. अग्रवाल ने कहा कि वैसे भी सीयूईटी की परीक्षा करवाने वाली संस्था अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाती वर्तमान वर्ष में भी छात्रों के परीक्षा केंद्र अन्य प्रदेशों में बना दिया गए जिसका कोई औचित्य नहीं है यह समस्या हर वर्ष आती है तब छात्रों के परीक्षा केंद्र दूर दराज के क्षेत्र में बना दिए जाते हैं अब सीयूईटी की परीक्षा मात्र परीक्षा एजेंसी को लाभ देने के उद्देश्य हेतु ही दिखाई देती है।

बंगाल की सत्ता पर भाजपा के "अधिकारी"

शंभू नाथ गौतम
वरिष्ठ पत्रकार

शनिवार, 9 मई 2026 भारतीय राजनीति के इतिहास में उस दिन के रूप में दर्ज हो गया, जब पश्चिम बंगाल में पहली बार भारतीय जनता पार्टी ने सत्ता हासिल कर ली। लंबे राजनीतिक संघर्ष, लगातार चुनावी प्रयासों और वर्षों की रणनीति के बाद भाजपा ने आखिरकार बंगाल का किला फतह कर लिया। कोलकाता के ऐतिहासिक ब्रिगेड परेड मैदान में शुभेंदु अधिकारी ने मुख्यमंत्री पद की शपथ लेकर राज्य में भाजपा युग की औपचारिक शुरुआत कर दी। कभी ममता बनर्जी के सबसे भरोसेमंद सहयोगी रहे शुभेंदु अब उसी बंगाल की सत्ता के सबसे बड़े चेहरे बन गए हैं। शपथ ग्रहण समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, कई केंद्रीय मंत्री और भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्री मौजूद रहे। प्रधानमंत्री मोदी के चेहरे पर जीत का आत्मविश्वास साफ दिखाई दिया, क्योंकि 2014 से भाजपा के लिए सबसे बड़ी राजनीतिक चुनौती बने बंगाल में आखिरकार कमल खिल चुका है। 294 सदस्यीय विधानसभा में 207 सीटें जीतकर भाजपा ने तृणमूल कांग्रेस के 15 साल पुराने शासन का अंत कर दिया और "सोनार बांग्ला" के अपने राजनीतिक संकल्प को सत्ता में बदल दिया।

पश्चिम बंगाल की राजनीति में शनिवार, 9 मई 2026 का दिन ऐतिहासिक मोड़ लेकर आया। जिस बंगाल को कभी वामपंथ का अभेद्य किला माना गया, फिर जहां तृणमूल कांग्रेस ने डेढ़ दशक तक अपना मजबूत राजनीतिक वर्चस्व कायम रखा, उसी बंगाल में अब भारतीय जनता पार्टी ने सत्ता पर कब्जा कर लिया है। कोलकाता के ऐतिहासिक ब्रिगेड परेड मैदान में शुभेंदु अधिकारी ने मुख्यमंत्री पद की शपथ लेकर राज्य में भाजपा सरकार की औपचारिक शुरुआत कर दी। इसके साथ ही पश्चिम बंगाल में पहली बार भाजपा की सरकार बनी और लंबे समय से चला आ रहा राजनीतिक संघर्ष सत्ता परिवर्तन में बदल गया। यह जीत केवल एक चुनावी परिणाम नहीं मानी जा रही, बल्कि भाजपा के लिए वैचारिक और राजनीतिक रूप से सबसे बड़ी उपलब्धियों में शामिल हो गई है। वर्ष 2014 में केंद्र में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार बनने के बाद से भाजपा लगातार बंगाल में अपनी राजनीतिक जमीन मजबूत करने में जुटी हुई थी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा संगठन ने गांव-गांव तक अपनी पहुंच बढ़ाई, लेकिन 2021 के विधानसभा चुनाव में पूरी ताकत लगाने के बावजूद पार्टी सत्ता तक नहीं पहुंच सकी थी। उस हार के बाद भाजपा ने संगठन, रणनीति और नेतृत्व तीनों स्तर पर बड़े बदलाव किए और आखिरकार इस बार बंगाल की सत्ता तक पहुंचने में सफल रही। ब्रिगेड परेड मैदान में हुए शपथ ग्रहण समारोह को भाजपा ने शक्ति प्रदर्शन में बदल दिया। शनिवार सुबह से ही मैदान के आसपास हजारों कार्यकर्ता जुटने लगे थे। भगवा झंडों, नारों और विशाल एलईडी स्क्रीन के बीच माहौल पूरी तरह चुनावी जीत के उत्सव में बदल गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पहुंचते ही "भारत माता की जय" और "बंगाल वॉन्ट्स बीजेपी" के नारों से पूरा इलाका गूंज उठा। प्रधानमंत्री मोदी ने मैदान तक पहुंचने के लिए विशेष रूप से तैयार रथ का इस्तेमाल किया। मंच पर पहुंचने के बाद उन्होंने सबसे पहले रवींद्रनाथ टैगोर की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि दी। शुभेंदु अधिकारी ने बांग्ला भाषा में ईश्वर के नाम पर शपथ ली। सादे भगवा कुर्ते में नजर आए शुभेंदु अधिकारी का अंदाज भाजपा कार्यकर्ताओं के बीच खास आकर्षण का केंद्र रहा। शपथ लेने के बाद उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पास जाकर झुककर प्रणाम किया। प्रधानमंत्री ने उनकी पीठ थपथपाकर शुभकामनाएं दीं। समारोह के अंत में प्रधानमंत्री मोदी ने मंच से जनता का अभिवादन किया और घुटनों के बल बैठकर लोगों को प्रणाम किया। यह दृश्य पूरे कार्यक्रम का सबसे चर्चित क्षण बन गया। राज्यपाल आर.एन. रवि ने शुभेंदु अधिकारी के साथ पांच अन्य विधायकों को भी मंत्री पद की शपथ दिलाई। इनमें दिलीप घोष, अग्निमित्रा पॉल, निशीथ प्रमाणिक, अशोक कीर्तनिया और क्षुदीराम टुडू शामिल

रहे। भाजपा नेतृत्व ने संकेत दिए हैं कि आने वाले दिनों में मंत्रिमंडल का और विस्तार किया जा सकता है। नई सरकार में क्षेत्रीय और सामाजिक संतुलन बनाने की रणनीति पर भी काम किया जा रहा है। इस शपथ ग्रहण समारोह में भाजपा और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन शासित राज्यों के लगभग बीस मुख्यमंत्री मौजूद रहे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा, केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी, अश्विनी वैष्णव, पीयूष गोयल, धर्मेंद्र प्रधान, सर्बानंद सोनोवाल, निशीथ प्रमाणिक, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव, राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडू, त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा और सिक्किम के मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग पश्चिम बंगाल में अधिकारी के शपथ समारोह में शामिल हुए। उद्योगपति, फिल्म जगत की हस्तियां और विभिन्न धार्मिक संगठनों के प्रतिनिधि भी कार्यक्रम में शामिल हुए। भाजपा ने इस आयोजन को "सोनार बांग्ला" के नए अध्याय की शुरुआत बताया।

ममता के 'सिपाही' से भाजपा के सबसे बड़े चेहरे बने शुभेंदु अधिकारी

पश्चिम बंगाल की राजनीति में शुभेंदु अधिकारी का उदय केवल एक नेता के सत्ता तक पहुंचने की कहानी नहीं है, बल्कि यह उस राजनीतिक संघर्ष, महत्वाकांक्षा और टूटते विश्वास की दास्तान भी है जिसने बंगाल की सत्ता का पूरा समीकरण बदल दिया। कभी ममता बनर्जी के सबसे भरोसेमंद नेताओं में गिने जाने वाले शुभेंदु अधिकारी आज उसी तृणमूल कांग्रेस को सत्ता से बाहर करने वाले सबसे बड़े चेहरे बन चुके हैं। बंगाल में भाजपा की ऐतिहासिक जीत के बाद यह सवाल फिर चर्चा में है कि आखिर ऐसा क्या हुआ कि ममता का सबसे मजबूत संगठनकर्ता धीरे-धीरे उनसे दूर होता चला गया और अंततः भाजपा का सबसे प्रभावशाली नेता बन गया।

यह केवल दल बदल की कहानी नहीं थी। इसके पीछे लंबे समय से चल रहा असंतोष, नेतृत्व के भीतर अविश्वास और उत्तराधिकार की राजनीति भी शामिल थी। शुभेंदु अधिकारी ने तृणमूल कांग्रेस को गांव-गांव तक मजबूत करने में बड़ी भूमिका निभाई थी। दक्षिण बंगाल में पार्टी के विस्तार से लेकर नंदीग्राम आंदोलन तक, उनका राजनीतिक प्रभाव लगातार बढ़ता गया। लेकिन जैसे-जैसे उनका कद बढ़ा, पार्टी के भीतर दूरी भी बढ़ती चली गई।

दिल्ली की एक पुरानी राजनीतिक घटना आज फिर चर्चा में है। संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार के दौर की एक कैबिनेट बैठक में ममता बनर्जी अचानक नाराज होकर बैठक छोड़कर चली गई थीं। वहां मौजूद नेताओं में हैरानी थी। तभी वरिष्ठ नेता प्रणव मुखर्जी ने शांत अंदाज में कहा था कि यदि कोई व्यक्ति खुद को हर क्षेत्र में सबसे बेहतर समझने लगे तो फिर उसके लिए हर चीज समस्या बन जाती है। राजनीतिक हलकों में उस टिप्पणी को आज ममता बनर्जी के व्यक्तित्व और उनके नेतृत्व शैली से जोड़कर देखा जा रहा है। शुभेंदु अधिकारी का राजनीतिक आधार दक्षिण बंगाल में मजबूत रहा है। उनके पिता शिशिर अधिकारी कांग्रेस के प्रभावशाली नेता थे और मनमोहन सिंह सरकार में मंत्री भी रह चुके थे। कोंताई और तमलुक जैसे क्षेत्रों में अधिकारी परिवार की मजबूत पकड़ थी। इसी दौर में नंदीग्राम आंदोलन ने बंगाल की राजनीति को पूरी

तृणमूल का किला ढहा, भाजपा ने बदला बंगाल का पूरा राजनीतिक समीकरण

पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के परिणामों ने राज्य की राजनीति को पूरी तरह बदल दिया। 294 सदस्यीय विधानसभा में भाजपा ने 207 सीटों पर जीत दर्ज कर स्पष्ट बहुमत हासिल किया। वहीं ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली तृणमूल कांग्रेस 80 सीटों तक सिमट गई। यह परिणाम इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि पिछले पंद्रह वर्षों से राज्य की राजनीति पूरी तरह तृणमूल कांग्रेस के इर्द-गिर्द घूमती रही थी। भाजपा ने इस बार केवल हिंदुत्व या राष्ट्रवाद के मुद्दे पर चुनाव नहीं लड़ा, बल्कि संगठनात्मक मजबूती, बूथ प्रबंधन और स्थानीय नेतृत्व को भी केंद्र में रखा। शुभेंदु अधिकारी को मुख्यमंत्री चेहरा बनाए जाने के बाद भाजपा को ग्रामीण बंगाल और पूर्व मेदिनीपुर क्षेत्र में बड़ा लाभ मिला। कभी ममता बनर्जी के करीबी सहयोगी रहे शुभेंदु ने तृणमूल कांग्रेस की राजनीतिक रणनीति और संगठनात्मक ढांचे को करीब से देखा था। भाजपा ने उसी अनुभव को चुनावी ताकत में बदल दिया। चुनाव प्रचार के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह ने बंगाल में लगातार सभाएं कीं। भाजपा ने "डबल इंजन सरकार" का नारा देते हुए विकास, उद्योग, रोजगार और कानून व्यवस्था को मुख्य मुद्दा बनाया। दूसरी ओर तृणमूल कांग्रेस भाजपा को बाहरी पार्टी बताकर बंगाली अस्मिता का मुद्दा उठाती रही, लेकिन इस बार वह रणनीति मतदाताओं को पूरी तरह प्रभावित नहीं कर सकी। भाजपा की जीत के पीछे महिलाओं, युवा मतदाताओं और पहली बार वोट करने वाले वर्ग की भूमिका भी अहम मानी जा रही है। पार्टी ने ग्रामीण क्षेत्रों में संगठन को मजबूत करने के साथ-साथ शहरी क्षेत्रों में भी अपनी पकड़ बढ़ाई। राजनीतिक तौर पर यह परिणाम भाजपा के लिए केवल बंगाल तक सीमित नहीं है, बल्कि इसे राष्ट्रीय राजनीति के लिहाज से भी बड़ी सफलता माना जा रहा है। शुभेंदु अधिकारी अब पश्चिम बंगाल के नौवें मुख्यमंत्री बन गए हैं। उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती राज्य में राजनीतिक तनाव को कम करने, प्रशासनिक संतुलन स्थापित करने और चुनाव के दौरान किए गए वादों को जमीन पर उतारने की होगी। भाजपा नेतृत्व यह संदेश देने की कोशिश कर रहा है कि उसकी सरकार केवल राजनीतिक बदलाव नहीं, बल्कि प्रशासनिक और आर्थिक परिवर्तन भी लेकर आएगी।

नई सरकार के गठन के साथ ही अब पूरे देश की नजर बंगाल पर टिक गई है। भाजपा के लिए यह केवल एक राज्य की जीत नहीं, बल्कि उस लंबे राजनीतिक अभियान की सफलता है, जिसकी शुरुआत एक दशक पहले हुई थी। वहीं तृणमूल कांग्रेस के लिए यह परिणाम आत्ममंथन का बड़ा अवसर माना जा रहा है। बंगाल की राजनीति में अब एक नए दौर की शुरुआत हो चुकी है, जहां सत्ता परिवर्तन के साथ राज्य का राजनीतिक चरित्र भी तेजी से बदलता दिखाई दे रहा है।

तरह बदल दिया। भूमि अधिग्रहण के खिलाफ चले आंदोलन में शुभेंदु अधिकारी सबसे बड़े जननेता के रूप में उभरे। उन्होंने वामपंथी सरकार के खिलाफ मोर्चा संभाला और यही आंदोलन आगे चलकर वाम शासन के पतन की बड़ी वजह बना। ममता बनर्जी ने उनकी राजनीतिक क्षमता को जल्दी पहचान लिया था। उन्हें तृणमूल कांग्रेस की युवा इकाई की जिम्मेदारी दी गई और जंगलमहल जैसे संवेदनशील क्षेत्रों का प्रभारी बनाया गया। उस समय जंगलमहल में माओवादी प्रभाव तेजी से बढ़ रहा था। शुभेंदु अधिकारी ने वहां संगठन को मजबूत किया और पार्टी को नई राजनीतिक जमीन दिलाई। कुछ ही वर्षों में तृणमूल कांग्रेस ने कांग्रेस और वाम दलों दोनों को पीछे छोड़ते हुए इस क्षेत्र में अपना प्रभाव स्थापित कर लिया। वर्ष 2009 में शुभेंदु अधिकारी तमलुक से लोकसभा पहुंचे। उन्होंने मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के दिग्गज नेता लक्ष्मण सेठ को बड़े अंतर से हराया। 2014 में भी उन्होंने अपनी सीट बरकरार रखी। इसके बाद 2016 में उन्हें नंदीग्राम विधानसभा सीट से चुनाव मैदान में उतारा गया, जहां उन्होंने भारी जीत दर्ज की। उनकी इस सफलता के बाद ममता बनर्जी ने उन्हें परिवहन मंत्री बनाया और बाद में पर्यावरण मंत्रालय की जिम्मेदारी भी सौंपी। लेकिन इसी दौरान पार्टी के भीतर राजनीतिक दूरी बढ़ने लगी। माना जाता है कि ममता बनर्जी शुभेंदु अधिकारी के बढ़ते प्रभाव को लेकर सतर्क हो गई थीं। दूसरी तरफ पार्टी में अभिषेक बनर्जी का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा था। तृणमूल कांग्रेस के भीतर उत्तराधिकार को लेकर नई राजनीतिक धुरी तैयार हो रही थी और शुभेंदु अधिकारी खुद को उससे अलग महसूस करने लगे थे।

तृणमूल कांग्रेस के भीतर शुभेंदु अधिकारी और अभिषेक बनर्जी के बीच की प्रतिस्पर्धा धीरे-धीरे खुलकर सामने आने लगी। पार्टी संगठन में बदलाव किए गए। युवा इकाई को नए ढंग से तैयार किया गया और अभिषेक बनर्जी को लगातार मजबूत भूमिका दी जाने लगी। राजनीतिक तौर पर शुभेंदु अधिकारी का इस्तेमाल संगठन विस्तार के लिए किया गया, लेकिन उन्हें कभी भी ममता बनर्जी के सबसे करीबी नेताओं के दायरे में जगह नहीं मिली। शुभेंदु अधिकारी की कार्यशैली भी बाकी नेताओं से अलग मानी जाती थी। विधायक बनने के बाद भी उन्होंने कोलकाता में स्थायी राजनीतिक ठिकाना नहीं बनाया। वे रोज अपने क्षेत्र से राजधानी तक लंबी दूरी तय करते थे और देर रात घर लौटते थे। इससे उनकी छवि एक जमीनी नेता की बनी रही। लेकिन पार्टी के भीतर उन्हें धीरे-धीरे अलग-थलग किए जाने की चर्चा तेज होने लगी। आखिरकार 2021 विधानसभा चुनाव से पहले शुभेंदु अधिकारी भाजपा में शामिल हो गए। भाजपा ने उन्हें केवल एक नेता के रूप में नहीं, बल्कि बंगाल में सत्ता परिवर्तन के सबसे बड़े चेहरे के रूप में पेश किया। नंदीग्राम में उन्होंने सीधे ममता बनर्जी को चुनौती दी और वहीं से बंगाल की राजनीति में नया मोड़ शुरू हुआ।

मरीजों के प्रति समर्पित हैं डॉ ललित मोहन रखोलिया

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

मूलतः गंगोलीहाट जिला पिथौरागढ़ के रहने वाले डॉ ललित मोहन रखोलिया रेडियोलॉजिस्ट, सयुक्त निदेशक स्वास्थ्य विभाग उत्तराखंड का जन्म नैनीताल जिले के देवल चौड़ गांव में हुआ था। प्राथमिक शिक्षा प्राथमिक विद्यालय झलुआजाला से हुई, राजकीय इंटर कालेज कालाढूंगी से इंटर मीडिएट की परीक्षा पास करने के बाद, स्नातक की परीक्षा आगरा डिग्री कालेज से प्रथम श्रेणी मे पास की, डॉ. रखोलिया बचपन से ही चिकित्सक बनकर समाज की सेवा करना चाहते थे, इन्होंने एम.बी.बी.एस., बाबा राघव दास मेडिकल कॉलेज गोरखपुर से किया और रेडियोलॉजी में परास्नातक सरोजनी नायडू मेडिकल कालेज आगरा से किया। लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा पास करने के बाद डॉ रखोलिया की नियुक्ति अल्मोड़ा जनपद के सुदूर क्षेत्र प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ध्यारी में हुई, लगभग 07 वर्ष की सेवा के बाद, स्थानांतरण शोबन सिंह जीना बेस चिकित्सालय हल्द्वानी, नैनीताल में हुआ, 06 वर्षों की सेवा के बाद स्थानांतरण, राजकीय उप जिला चिकित्सालय लोहाघाट हुआ, तत्पश्चात लगभग 7 वर्ष बाद स्थानांतरण राजकीय उप जिला चिकित्सालय टनकपुर में सेवा दे रहे हैं।

माननीय पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत, माननीय मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, नगर पालिका हल्द्वानी, सुरेन्द्र नारायण पांडे जिलाधिकारी चंपावत, नरेंद्र सिंह भंडारी जिलाधिकारी चंपावत, विनीत तोमर जिलाधिकारी चंपावत, नवनीत पांडे, जिलाधिकारी चंपावत, मुख्य चिकित्साधीसक महिला अस्पताल पिथौरागढ़, मुख्य चिकित्सा अधिकारी पिथौरागढ़, मुख्य चिकित्सा अधिकारी चंपावत द्वारा कोरोना वॉरियर सम्मान, नगर पालिका लोहाघाट, माननीय विधायक लोहाघाट पूरण सिंह फर्त्याल द्वारा सम्मानित, रामलीला कमेटी लोहाघाट, व्यापार मंडल लोहाघाट अध्यक्ष आशा संगठन चंपावत, नगरपालिका अध्यक्ष लोहाघाट कोरोना मे विशिष्ट कार्य हेतु सम्मानित, अध्यक्ष स्वतंत्रता उत्तराधिकारी संगठन चंपावत, चिकित्सा क्षेत्र मे उत्कृष्ट कार्य हेतु नागेन्द्र जोशी द्वारा कुमाऊनी गाना बनाया गया, मुख्य चिकित्सा दीक्षक टनकपुर द्वारा सम्मानित, व्यापार मंडल अध्यक्ष टनकपुर, नगरपालिका टनकपुर, हरेला क्लब टनकपुर, स्वतंत्रता सेनानी उत्तराधिकारी संगठन टनकपुर, पुनर्नवा महिला समिति हल्द्वानी, अभिनय एवं नाट्य प्रशिक्षण कार्यशाला नई दिल्ली द्व ारा हल्द्वानी में सम्मानित, माननीय विधायक कैलाश चंद्र गहतोड़ी द्वारा टनकपुर में सम्मानित, शिवसेना युवा सेना द्वारा हल्द्वानी मे सम्मानित, स्वर्गीय ऊषा गुप्ता जन सेवा समिति हल्द्वानी, भारत रत्न पंडित मदन मोहन मालवीय जी की जयंती पर उत्कृष्ट कार्य के लिए हल्द्वानी मे सम्मानित, सामाजिक संगठन लोहाघाट द्व ारा सम्मानित, वदाकोइ कराटे दो एसोसिएशन द्वारा रीयल लाइफ फाइटर अवॉर्ड से हल्द्वानी मै सम्मानित, दैनिक जागरण हल्द्वानी द्वारा कोरोना वॉरियर सम्मान, प्रांतीय चिकित्सा सेवा संघ उत्तराखंड, गणेश महोत्सव शिव मंदिर कमेटी हल्द्वानी, सेलनेट कार्यशाला हल्द्वानी, पुनर्नवा महिला समिति हल्द्वानी, शरदोत्सव मेला समिति हल्द्व ानी स्वास्थ्य मंत्री उत्तराखंड सरकार द्वारा सम्मानित मरीजों के प्रति समर्पित हैं।

बंगाल जीत से उत्तराखंड भाजपा में बढ़ा आत्मविश्वास

पश्चिम बंगाल, असम और पुडुचेरी विधानसभा चुनावों में भाजपा को मिली ऐतिहासिक जीत के बाद देहरादून स्थित प्रदेश भाजपा कार्यालय में जश्न का माहौल देखने को मिला। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ बंगाल की प्रसिद्ध झालमुड़ी खाकर जीत का उत्सव मनाया और इसे "सनातन, राष्ट्रवाद और विकास की राजनीति की विजय" बताया। इस दौरान धामी ने बड़ा राजनीतिक बयान देते हुए दावा किया कि जिस तरह जनता ने बंगाल में भाजपा पर भरोसा जताया है, उसी तरह उत्तराखंड में भी 2027 में भाजपा लगातार तीसरी बार सरकार बनाएगी और राज्य में फिर कमल खिलेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देशभर में राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक चेतना की लहर चल रही है, जिसे जनता का भरपूर समर्थन मिल रहा है। धामी ने विपक्ष पर तुष्टीकरण, परिवारवाद और विभाजनकारी राजनीति करने का आरोप लगाते हुए कहा कि जनता अब काम और विकास के आधार पर वोट दे रही है। भाजपा कार्यकर्ताओं ने इस जीत को "गंगोत्री से गंगासागर तक भगवा विजय" बताते हुए जमकर जश्न मनाया। दिव्य हिमगिरि रिपोर्ट

पश्चिम बंगाल, असम और पुडुचेरी विधानसभा चुनावों में भाजपा को मिली ऐतिहासिक जीत के बाद देशभर में पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच जबरदस्त उत्साह देखने को मिल रहा है। देवभूमि उत्तराखंड भी इस राजनीतिक उत्सव से अछूता नहीं रहा। देहरादून स्थित प्रदेश भाजपा कार्यालय में बुधवार को जीत का ऐसा जश्न देखने को मिला, जहां राजनीति, संस्कृति, राष्ट्रवाद और संगठन शक्ति एक साथ दिखाई दिए। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी स्वयं पार्टी कार्यालय पहुंचे और कार्यकर्ताओं के साथ बंगाल की प्रसिद्ध झालमुड़ी खाकर जीत का जश्न मनाया। इस दौरान भाजपा कार्यालय "जय श्रीराम", "मोदी-मोदी" और "भारत माता की जय" के नारों से देर तक गूंजता रहा।

प्रदेश भाजपा कार्यालय में सुबह से ही कार्यकर्ताओं की भारी भीड़ जुटनी शुरू हो गई थी। कोई ढोल बजा रहा था, कोई मिठाइयां बांट रहा था तो कोई भगवा झंडा लहराकर बंगाल में भाजपा की जीत का जश्न मना रहा था। मुख्यमंत्री धामी जैसे ही कार्यक्रम स्थल पहुंचे, कार्यकर्ताओं ने फूल बरसाकर उनका स्वागत किया। माहौल पूरी तरह चुनावी विजय के उत्सव में बदल चुका था। भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं ने इस जीत को केवल चुनावी सफलता नहीं बल्कि "सनातन राष्ट्रवाद की निर्णायक विजय" करार दिया। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि पश्चिम बंगाल की जनता ने दशकों पुराने भय, भ्रष्टाचार, तुष्टीकरण और राजनीतिक हिंसा के माहौल को खत्म करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि यह जीत केवल भाजपा की नहीं बल्कि राष्ट्रवाद, विकास और सांस्कृतिक अस्मिता की जीत है। धामी ने कहा कि गंगोत्री से गंगासागर तक लहराता भगवा आज देश में बदलती राजनीतिक चेतना का प्रतीक बन चुका है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश में सनातन संस्कृति और राष्ट्रवाद की जो नई चेतना जागी है, उसी का परिणाम बंगाल, असम और पुडुचेरी के चुनाव परिणाम हैं। उन्होंने कहा कि जनता अब जातिवाद, तुष्टीकरण और विभाजनकारी राजनीति से ऊपर उठकर विकास, सुरक्षा और सांस्कृतिक गौरव के मुद्दों पर मतदान कर रही है। धामी ने कहा कि भाजपा की जीत "सेवा, समर्पण और राष्ट्र प्रथम" की राजनीति पर जनता की मुहर है। मुख्यमंत्री धामी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा संगठन की रणनीति की भी जमकर सराहना की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने देश की राजनीति को नई दिशा दी है। उनकी योजनाओं और नीतियों ने गरीब, महिला, युवा और किसानों के जीवन में वास्तविक बदलाव लाया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि भाजपा अब केवल एक राजनीतिक दल नहीं बल्कि राष्ट्र निर्माण का आंदोलन बन चुकी है।

मुख्यमंत्री ने विपक्षी दलों पर भी तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि जो राजनीतिक दल वर्षों तक तुष्टीकरण, भ्रष्टाचार और परिवारवाद की राजनीति करते रहे, जनता ने उन्हें लोकतांत्रिक तरीके से जवाब दे दिया है। धामी ने कहा कि सनातन धर्म के खिलाफ बोलने वालों और राष्ट्रविरोधी राजनीति करने वालों को जनता धीरे-धीरे राजनीति के नक्शे से बाहर कर रही है। उन्होंने कहा कि बंगाल की जनता ने यह साबित कर दिया कि देश अब भय और अराजकता की राजनीति नहीं बल्कि विकास और राष्ट्रवाद चाहता है। सीएम धामी ने कहा कि बंगाल में भाजपा की जीत "स्वाधीनता के उत्सव" जैसी है। वहां के लोग इसे "ममता राज से मुक्ति" के रूप में देख रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि घुसपैठ, भ्रष्टाचार, नरसंहार और राजनीतिक हिंसा के खिलाफ जनता ने निर्णायक जनादेश दिया है। उन्होंने कहा कि बंगाल और असम का कोना-कोना आज भगवामय दिखाई दे रहा है और यह मां काली और मां कामाख्या की

कृपा का परिणाम है।

पश्चिम बंगाल जीत के बहाने सीएम धामी ने फूंका 2027 चुनावी बिगुल

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने इस दौरान उत्तराखंड की राजनीति को लेकर भी बड़ा बयान दिया। उन्होंने कहा कि भाजपा 2027 में उत्तराखंड में लगातार तीसरी बार सरकार बनाएगी और राज्य में "जीत की हैट्रिक" लगेगी। धामी का यह बयान राजनीतिक गलियारों में चर्चा का बड़ा विषय बन गया है। इसे भाजपा के आगामी चुनावी अभियान की शुरुआती रणनीति के तौर पर देखा जा रहा है। मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि उत्तराखंड में डबल इंजन सरकार तेजी से विकास कार्यों को आगे बढ़ा रही है। चारधाम ऑल वेदर रोड परियोजना, ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेल लाइन, दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे, केदारनाथ-बदरीनाथ पुनर्विकास परियोजना और सीमांत क्षेत्रों में सड़क व कनेक्टिविटी को मजबूत करने जैसे काम राज्य की तस्वीर बदल रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में उत्तराखंड विकास और आध्यात्मिक पर्यटन का नया केंद्र बन रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि भाजपा की योजनाओं ने देश में राजनीति की दिशा बदल दी है। आयुष्मान भारत, उज्ज्वला योजना, पीएम आवास, जल जीवन मिशन, जनधन योजना, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, नारी वंदन और लखपति दीदी जैसी योजनाओं ने गरीबों और महिलाओं को नई ताकत दी है। जनता अब घोषणाओं नहीं बल्कि काम और परिणाम पर भरोसा कर रही है। सीएम धामी ने प्रधानमंत्री मोदी और जनता के बीच भावनात्मक जुड़ाव का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि बंगाल चुनाव प्रचार के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि सरकार बनने के बाद वह फिर से झालमुड़ी खाने आएंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह केवल राजनीतिक बयान नहीं बल्कि आम जनता के साथ उनके आत्मीय संबंध का प्रतीक है। भाजपा की सबसे बड़ी ताकत यही है कि उसका नेतृत्व जनता से सीधा संवाद करता है। सीएम धामी ने कहा कि विपक्ष जहां परिवारवाद और विरासत की राजनीति में उलझा रहा, वहीं प्रधानमंत्री मोदी ने अपने काम को ही अपनी पहचान बनाया। उन्होंने कहा कि जनता ने शोर, भ्रम और नफरत को नहीं बल्कि "परफॉर्मेंस" और सुशासन को वोट दिया है। भाजपा अब देशभर में विकास, राष्ट्रवाद और सनातन संस्कृति के एजेंडे को लेकर आगे बढ़ रही है। भाजपा कार्यालय देर शाम तक जश्न के माहौल में डूबा रहा। सीएम धामी ढोल-नगाड़ों, नाच-गाने और मिठाइयों के बीच भाजपा कार्यकर्ता इस जीत को आने वाले वर्षों की राष्ट्रीय राजनीति का बड़ा मोड़ बताते रहे। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह जनादेश केवल सरकार बदलने का नहीं बल्कि देश की राजनीतिक संस्कृति बदलने का संदेश है।

आस्था का महाकुंभ बना चारधाम, केदारनाथ में रिकॉर्ड भीड़

उत्तराखंड की विश्वप्रसिद्ध चारधाम यात्रा इस बार आस्था, भीड़ और व्यवस्थाओं के नए रिकॉर्ड बना रही है। यात्रा शुरू होने के शुरुआती दिनों में ही आठ लाख से अधिक श्रद्धालु बाबा केदार, बदरी विशाल, गंगोत्री और यमुनोत्री धाम के दर्शन कर चुके हैं। सबसे ज्यादा भीड़ केदारनाथ धाम में उमड़ रही है, जहां केवल शुरुआती चार दिनों में ही 1.24 लाख से ज्यादा श्रद्धालु पहुंच गए। तीन मई को एक ही दिन में करीब 57 हजार यात्रियों के चारधाम पहुंचने से प्रशासन भी अलर्ट मोड में आ गया। भारी भीड़ के चलते कई जगह टोकन व्यवस्था लागू करनी पड़ी, जबकि सुरक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को भी बढ़ाया गया है। दूसरी ओर मौसम भी यात्रा की बड़ी चुनौती बना हुआ है। बारिश, ओलावृष्टि और तेज हवाओं को लेकर मौसम विभाग लगातार अलर्ट जारी कर रहा है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी लगातार यात्रा व्यवस्थाओं की मॉनिटरिंग कर रहे हैं और सरकार श्रद्धालुओं की सुरक्षा, ट्रैफिक नियंत्रण, स्वास्थ्य सेवाओं और आपदा प्रबंधन को लेकर हाई अलर्ट पर काम कर रही है। दिव्य हिमगिरि रिपोर्ट

उत्तराखंड की विश्वप्रसिद्ध चारधाम यात्रा इस बार शुरुआती दिनों से ही नए रिकॉर्ड बनाती नजर आ रही है। गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ और बदरीनाथ धाम में श्रद्धालुओं की ऐसी भीड़ उमड़ रही है, जिसने पिछले कई वर्षों के आंकड़ों को पीछे छोड़ दिया है। यात्रा शुरू होने के कुछ ही दिनों के भीतर आठ लाख से अधिक श्रद्धालु चारों धामों में दर्शन कर चुके हैं। सबसे ज्यादा भीड़ बाबा केदार के धाम में देखने को मिल रही है, जहां हर दिन हजारों श्रद्धालु लंबी पैदल यात्रा कर दर्शन के लिए पहुंच रहे हैं। उत्तराखंड सरकार और प्रशासन के सामने जहां एक ओर इतनी बड़ी संख्या में पहुंच रहे यात्रियों को सुरक्षित और सुगम यात्रा उपलब्ध कराने की चुनौती है, वहीं मौसम भी लगातार परीक्षा ले रहा है। बारिश, बर्फबारी, ओलावृष्टि और तेज हवाओं के बीच श्रद्धालुओं का उत्साह कम नहीं हुआ है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी स्वयं यात्रा व्यवस्थाओं की लगातार मॉनिटरिंग कर रहे हैं और अधिकारियों को हर स्तर पर सतर्क रहने के निर्देश दिए गए हैं। चारधाम यात्रा इस बार केवल धार्मिक यात्रा नहीं बल्कि आस्था, पर्यटन, अर्थव्यवस्था और व्यवस्थाओं की सबसे बड़ी परीक्षा बन चुकी है। उत्तराखंड में चारधाम यात्रा की शुरुआत के साथ ही इस बार श्रद्धालुओं की संख्या ने रिकॉर्ड गति पकड़ ली। यात्रा के शुरुआती दिनों में ही लाखों श्रद्धालुओं के पहुंचने से साफ हो गया कि इस बार यात्रा पिछले सभी वर्षों के

चारधाम यात्रा में लगातार बढ़ रही भीड़ के बीच प्रशासन के सामने बड़ी चुनौती

चारधाम यात्रा में लगातार बढ़ रही भीड़ के बीच प्रशासन के सामने सबसे बड़ी चुनौती व्यवस्थाओं को संतुलित बनाए रखने की है। खासतौर पर केदारनाथ धाम में श्रद्धालुओं की संख्या उम्मीद से कहीं ज्यादा पहुंच रही है। कई बार पैदल मार्ग पर भीड़ इतनी बढ़ जाती है कि यात्रियों को रोकना पड़ रहा है। प्रशासन ने सोनप्रयाग और गौरीकुंड में बैरिकेडिंग और चरणबद्ध प्रवेश व्यवस्था लागू की है ताकि धाम में अनियंत्रित भीड़ न पहुंचे। हेलीकॉप्टर सेवाओं की मांग भी इस बार रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई है। कई दिनों तक एडवांस बुकिंग फुल चल रही है। वहीं दूसरी तरफ घोड़े-खच्चर संचालकों और पालकी सेवाओं की भी भारी मांग बनी हुई है। प्रशासन इन सेवाओं की निगरानी भी कर रहा है ताकि यात्रियों से तय दरों से अधिक शुल्क न वसूला जाए। स्वास्थ्य विभाग ने भी इस बार यात्रा मार्गों पर विशेष तैयारी की है। ऊंचाई वाले क्षेत्रों में सांस और हृदय संबंधी समस्याओं को देखते हुए मेडिकल टीमों को अलर्ट मोड पर रखा गया है। कई जगहों पर ऑक्सीजन बूथ बनाए गए हैं। डॉक्टर लगातार यात्रियों को सलाह दे रहे हैं कि बुजुर्ग और बीमार लोग स्वास्थ्य जांच के बाद ही यात्रा करें। चारधाम यात्रा में डिजिटल तकनीक का उपयोग भी इस बार बढ़ा है। ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन, लाइव मॉनिटरिंग और ट्रैकिंग सिस्टम के जरिए सरकार यात्रियों की संख्या और गतिविधियों पर नजर रख रही है। इससे प्रशासन को भीड़ प्रबंधन में मदद मिल रही है। हालांकि अचानक बढ़ती संख्या के कारण कई बार नेटवर्क और सिस्टम पर दबाव भी देखा गया। धार्मिक दृष्टि से भी इस बार की यात्रा बेहद खास मानी जा रही है। देशभर से साधु-संत, श्रद्धालु और विदेशी पर्यटक बड़ी संख्या में उत्तराखंड पहुंच रहे हैं। बाबा केदार और बदरी विशाल के जयकारों से पूरा पहाड़ भक्तिमय माहौल में डूबा हुआ है। सुबह से लेकर देर रात तक मंदिर परिसरों में श्रद्धालुओं की भीड़ बनी रहती है। यदि यही रफ्तार जारी रही तो इस बार चारधाम यात्रा नए ऐतिहासिक रिकॉर्ड बना सकती है। सरकार भी यात्रा अवधि के दौरान व्यवस्थाओं को और मजबूत करने की तैयारी में जुटी है। मुख्यमंत्री धामी ने कहा है कि श्रद्धालुओं की आस्था सर्वोपरि है और सरकार हर यात्री को सुरक्षित और सुगम दर्शन कराने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ काम कर रही है। चारधाम यात्रा अब केवल धार्मिक आयोजन नहीं रह गई है, बल्कि यह उत्तराखंड की संस्कृति, अर्थव्यवस्था और पर्यटन की सबसे बड़ी पहचान बन चुकी है। आठ लाख से अधिक श्रद्धालुओं की मौजूदगी ने यह साफ कर दिया है कि देवभूमि के प्रति लोगों की आस्था लगातार और मजबूत होती जा रही है। आने वाले दिनों में यात्रियों की संख्या और बढ़ने की संभावना है, जिसके चलते प्रशासन और सरकार दोनों पूरी तरह अलर्ट मोड में नजर आ रहे हैं।

रिकॉर्ड तोड़ सकती है। सरकार के ताजा आंकड़ों के मुताबिक अब तक आठ लाख से अधिक श्रद्धालु चारों धामों में दर्शन कर चुके हैं। सबसे अधिक भीड़ केदारनाथ धाम में दर्ज की गई है, जहां बाबा केदार के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ रहा है। तीन मई को एक ही दिन में लगभग 57 हजार से अधिक श्रद्धालु चारधाम पहुंचे, जिसने प्रशासन को भी सतर्क कर दिया। यात्रा मार्गों पर भारी ट्रैफिक दबाव देखने को मिला, जबकि कई स्थानों पर यात्रियों को घंटों इंतजार करना पड़ा। इसके बावजूद श्रद्धालुओं की आस्था और उत्साह में कोई कमी नहीं दिखाई दी। देश के अलग-अलग राज्यों से बड़ी संख्या में लोग उत्तराखंड पहुंच रहे हैं। रेलवे स्टेशन, बस अड्डे, होटल और यात्रा पड़ाव पूरी तरह यात्रियों से भरे हुए हैं। केदारनाथ धाम इस बार श्रद्धालुओं की आस्था का सबसे बड़ा केंद्र बना हुआ है। यात्रा के शुरुआती चार दिनों में ही लगभग 1.24 लाख श्रद्धालु बाबा केदार के दर्शन कर चुके हैं। गौरीकुंड से केदारनाथ तक के 16 किलोमीटर लंबे पैदल मार्ग पर लगातार श्रद्धालुओं की भीड़ बनी हुई है। कोई पैदल यात्रा कर रहा है, तो कोई घोड़े-खच्चरों और हेलीकॉप्टर सेवा का सहारा लेकर बाबा के दरबार पहुंच रहा है। सुबह चार बजे से ही मंदिर परिसर में लंबी कतारें लगनी शुरू हो जा रही हैं। भीड़ को नियंत्रित करने के लिए प्रशासन को टोकन व्यवस्था लागू करनी पड़ी है। यात्रा मार्ग पर अतिरिक्त पुलिस बल और एसडीआरएफ की टीमें तैनात की गई हैं। मेडिकल कैंप, ऑक्सीजन सुविधा और स्वास्थ्य जांच केंद्र भी सक्रिय किए गए हैं। प्रशासन लगातार यात्रियों से अपील कर रहा है कि वे मौसम को ध्यान में रखते हुए यात्रा करें और स्वास्थ्य संबंधी सावधानियां बरतें। चारधाम यात्रा के दौरान इस बार मौसम भी बड़ी चुनौती बना हुआ है। उत्तराखंड के कई जिलों में बारिश, ओलावृष्टि और तेज हवाओं को लेकर मौसम विभाग लगातार अलर्ट जारी कर रहा है। ऊंचाई वाले इलाकों में अचानक मौसम बदलने से यात्रियों को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। कई बार यात्रा मार्गों पर फिसलन और पत्थर गिरने जैसी घटनाओं का खतरा भी बढ़ गया है। यमुनोत्री और गंगोत्री धाम मार्ग पर भी बारिश के कारण यात्रियों की रफ्तार प्रभावित हुई है। प्रशासन ने यात्रियों को सलाह दी है कि वे मौसम अपडेट देखकर ही यात्रा करें। पुलिस और आपदा प्रबंधन विभाग की टीमें संवेदनशील इलाकों में लगातार निगरानी बनाए हुए हैं। सरकार ने हेल्पलाइन नंबर भी जारी किए हैं ताकि जरूरत पड़ने पर यात्रियों को तुरंत सहायता मिल सके। चारधाम यात्रा उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था की रीढ़ मानी जाती है। इस बार रिकॉर्ड संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने से होटल कारोबारियों, टैक्सी संचालकों, दुकानदारों और स्थानीय व्यापारियों में भारी उत्साह है। हरिद्वार, ऋषिकेश, सोनप्रयाग, गुप्तकाशी, जोशीमठ और उत्तरकाशी जैसे शहरों में होटल लगभग फुल चल रहे हैं। स्थानीय कारोबारियों का कहना है कि यात्रा के शुरुआती दिनों में ही व्यापार ने नई रफ्तार पकड़ ली है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी लगातार यात्रा व्यवस्थाओं की समीक्षा कर रहे हैं। उन्होंने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि श्रद्धालुओं की सुरक्षा और सुविधा में किसी तरह की लापरवाही न हो। धामी सरकार इस बार चारधाम यात्रा को सुरक्षित, सुव्यवस्थित और तकनीकी रूप से मजबूत बनाने पर विशेष फोकस कर रही है। यात्रा मार्गों पर स्वास्थ्य सेवाओं, ट्रैफिक प्रबंधन और आपदा नियंत्रण को मजबूत किया गया है।

धेनु घोटाले का मुख्य आरोपी सलाखों में

धेनु निवेश घोटाले में छह वर्षों से फरार चल रहे मुख्य आरोपी देवेन्द्र प्रकाश तिवारी की गिरफ्तारी को उत्तराखण्ड पुलिस की बड़ी कामयाबी माना जा रहा है। करोड़ों रुपये की धोखाधड़ी के इस बहुचर्चित मामले में आरोपी पर पचास हजार रुपये का इनाम घोषित था और कई राज्यों की पुलिस उसकी तलाश में जुटी हुई थी। उत्तराखण्ड अपराध अनुसंधान शाखा ने विशेष अभियान चलाकर उसे उत्तर प्रदेश के आगरा क्षेत्र से गिरफ्तार किया। आरोपी धेनु समूह की विभिन्न कंपनियों का संचालक बताया जा रहा है, जिस पर निवेशकों को भारी मुनाफे का लालच देकर करोड़ों रुपये हड़पने का आरोप है। इससे पहले उसका भाई और मामले का दूसरा प्रमुख आरोपी अनिल कुमार तिवारी भी मुंबई से गिरफ्तार किया जा चुका है। दोनों भाइयों के खिलाफ उत्तर प्रदेश के कई जिलों में एक दर्जन से अधिक मुकदमे दर्ज हैं। पुलिस का कहना है कि अब धेनु समूह से जुड़े सभी नामजद आरोपियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई पूरी कर ली गई है, जबकि निवेशकों की रकम और संपत्तियों से जुड़े पहलुओं की जांच अभी भी जारी है।

उत्तराखण्ड अपराध अनुसंधान शाखा को बहुचर्चित धेनु निवेश धोखाधड़ी मामले में बड़ी सफलता हाथ लगी है। करोड़ों रुपये की ठगी कर पिछले छह वर्षों से फरार चल रहे मुख्य आरोपी देवेन्द्र प्रकाश तिवारी को आखिरकार पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। उस पर पचास हजार रुपये का इनाम घोषित था और कई राज्यों की पुलिस लंबे समय से उसकी तलाश कर रही थी। गिरफ्तारी के बाद उसे हरिद्वार न्यायालय में पेश किया गया, जहां से न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। धेनु समूह से जुड़ा यह मामला लंबे समय से उत्तराखण्ड सहित कई राज्यों में चर्चा का विषय बना हुआ था। आरोप है कि समूह की कंपनियों ने लोगों को अधिक मुनाफे का लालच देकर निवेश कराया और बाद में करोड़ों रुपये लेकर फरार हो गए। हजारों निवेशकों की जमा पूंजी फंसने के बाद मामला विभिन्न राज्यों में दर्ज हुआ और जांच उत्तराखण्ड अपराध अनुसंधान शाखा को सौंपी गई। जांच के दौरान सामने आया कि कानपुर निवासी देवेन्द्र प्रकाश तिवारी धेनु समूह की कई कंपनियों का संचालक था। वह अपने भाई अनिल कुमार तिवारी के साथ मिलकर निवेश योजनाएं चलाता था। दोनों भाइयों पर लोगों को ऊंचे लाभ का भरोसा दिलाकर धन एकत्र करने और बाद में रकम हड़पने का आरोप है। मामले में लंबे समय से फरार चल रहे देवेन्द्र प्रकाश तिवारी की गिरफ्तारी के लिए कई राज्यों में दबिश दी जा रही थी। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, छह मई को उत्तराखण्ड अपराध अनुसंधान शाखा के निरीक्षक वेद प्रकाश थपलियाल के नेतृत्व में एक संयुक्त अभियान चलाया गया। इस अभियान में उत्तराखण्ड विशेष कार्य बल और कानपुर विशेष कार्य बल की टीम भी शामिल रही। लगातार निगरानी और गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस ने उत्तर प्रदेश के आगरा जनपद के डोकी क्षेत्र से देवेन्द्र प्रकाश तिवारी को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के बाद आरोपी को कड़ी सुरक्षा के बीच उत्तराखण्ड लाया गया। यहां उसे मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट हरिद्वार की अदालत में पेश किया गया। न्यायालय ने मामले की गंभीरता को देखते हुए आरोपी को न्यायिक हिरासत में भेज दिया। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि आरोपी से पूछताछ के दौरान निवेशकों की रकम, संपत्तियों और नेटवर्क से जुड़े कई महत्वपूर्ण तथ्य सामने आने की संभावना है। धेनु समूह के खिलाफ उत्तराखण्ड में लंबे समय से शिकायतें मिल रही थीं। निवेशकों का आरोप था कि उन्हें खेती, पशुपालन और विभिन्न योजनाओं में निवेश के नाम पर झांसा दिया गया। शुरुआत में लोगों को लाभ का भरोसा दिलाया गया, लेकिन बाद में भुगतान बंद कर दिया गया। इसके बाद कंपनी के संचालक भूमिगत हो गए थे।

कई राज्यों में दर्ज हैं ठगी के मुकदमे, दोनों भाइयों पर शिकंजा कसने के बाद जांच पूरी

इस मामले में देवेन्द्र प्रकाश तिवारी का भाई अनिल कुमार तिवारी पहले ही पुलिस गिरफ्त में आ चुका है। उसे दिसंबर 2025 में मुंबई से गिरफ्तार किया गया था। अब दोनों प्रमुख आरोपियों की गिरफ्तारी के बाद जांच एजेंसियों ने राहत की सांस ली है। पुलिस का कहना है कि धेनु एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड से जुड़े सभी छह नामजद आरोपियों के खिलाफ अब वैधानिक कार्रवाई पूरी कर ली गई है। जांच में यह भी सामने आया है कि दोनों भाइयों के खिलाफ उत्तर प्रदेश के कई जिलों में धोखाधड़ी के मामले दर्ज हैं। कानपुर, बरेली, लखीमपुर खीरी और जालौन समेत विभिन्न जनपदों में एक दर्जन से अधिक मुकदमे चल रहे हैं। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, निवेशकों से करोड़ों रुपये एकत्र करने के बाद समूह की गतिविधियां अचानक बंद हो गई थीं, जिसके बाद लोगों ने शिकायतें दर्ज करानी शुरू कीं। अपराध अनुसंधान शाखा के अधिकारियों का कहना है कि यह गिरफ्तारी केवल एक आरोपी को पकड़ने तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे आर्थिक अपराधों के खिलाफ चल रहे अभियान को भी मजबूती मिली है। पुलिस अब उन संपत्तियों और बैंक खातों की भी जांच कर रही है, जिनमें निवेशकों की रकम लगाए जाने की आशंका है। इस कार्रवाई के बाद उन निवेशकों में भी उम्मीद जगी है, जिन्होंने वर्षों पहले अपनी जमा पूंजी इस समूह में लगाई थी। कई पीड़ित लगातार न्याय की मांग कर रहे थे और आरोपी की गिरफ्तारी की प्रतीक्षा कर रहे थे। पुलिस का कहना है कि मामले से जुड़े आर्थिक पहलुओं की जांच अभी जारी है और जरूरत पड़ने पर अन्य लोगों से भी पूछताछ की जाएगी। उत्तराखण्ड पुलिस ने इस कार्रवाई को संगठित आर्थिक अपराधों के खिलाफ बड़ी उपलब्धि बताया है। अधिकारियों के अनुसार, फरार आरोपियों के खिलाफ लगातार अभियान चलाया जाएगा ताकि निवेशकों के साथ धोखाधड़ी करने वालों को कानून के दायरे में लाया जा सके।

चंपावत दुष्कर्म प्रकरण: विरोधियों को फ़साने के लिए साजिश का दावा

चंपावत के चर्चित नाबालिग दुष्कर्म प्रकरण में पुलिस जांच ने बड़ा मोड़ ले लिया है। शुरुआती आरोपों के बाद जहां प्रदेशभर में विरोध प्रदर्शन हुए, कांग्रेस समेत कई संगठनों ने सरकार और पुलिस प्रशासन को घेरा, वहीं अब एसआईटी की वैज्ञानिक और तकनीकी जांच में कथित साजिश की बात सामने आई है। पुलिस मुख्यालय की प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, घटना में नामजद तीनों आरोपियों की मौजूदगी घटनास्थल पर नहीं पाई गई, जबकि सीसीटीवी फुटेज, सीडीआर और फॉरेंसिक साक्ष्यों में कई तथ्य शुरुआती आरोपों से मेल नहीं खाते। जांच में बदले की भावना से नाबालिग को बहला-फुसलाकर घटनाक्रम रचने की आशंका जताई गई है। पुलिस का कहना है कि डिजिटल और फॉरेंसिक साक्ष्यों की विस्तृत जांच जारी है तथा यदि आरोप भ्रामक पाए गए तो संबंधित लोगों के खिलाफ भी सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। दिव्य हिमगिरि रिपोर्ट

चंपावत में कथित दुष्कर्म मामले को लेकर पिछले कुछ दिनों से प्रदेशभर में माहौल गरमाया हुआ था। नाबालिग के साथ सामूहिक दुष्कर्म के आरोप सामने आने के बाद राजनीतिक दलों, सामाजिक संगठनों और स्थानीय लोगों में भारी आक्रोश देखने को मिला। राजधानी देहरादून समेत चंपावत और अन्य जिलों में विरोध प्रदर्शन हुए, आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग उठी और कानून-व्यवस्था पर भी सवाल खड़े किए गए। कांग्रेस नेताओं ने इस मामले को गंभीर बताते हुए सरकार और पुलिस प्रशासन को घेरा, जबकि कई संगठनों ने पीड़िता को न्याय दिलाने की मांग को लेकर प्रदर्शन किए। इसी बीच अब इस पूरे मामले में उत्तराखंड पुलिस की जांच ने नया मोड़ ला दिया है। पुलिस मुख्यालय की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति में दावा किया गया है कि शुरुआती जांच और वैज्ञानिक साक्ष्यों के आधार पर मामला कथित तौर पर एक सुनियोजित साजिश के रूप में सामने आया है। पुलिस के अनुसार बदले की भावना से प्रेरित होकर नाबालिग को बहला-फुसलाकर पूरे घटनाक्रम को अंजाम दिया गया। मामले की शुरुआत 6 मई 2026 को हुई थी, जब एक व्यक्ति ने कोतवाली चंपावत में लिखित तहरीर देकर आरोप लगाया कि 5 मई की रात उसकी 16 वर्षीय पुत्री के साथ तीन लोगों ने दुष्कर्म किया। मामला नाबालिग से जुड़ा होने के कारण पुलिस ने तत्काल पोक्सो एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज किया और जांच शुरू कर दी।

घटना की संवेदनशीलता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक चंपावत रेखा यादव ने तत्काल दस सदस्यीय एसआईटी का गठन किया। क्षेत्राधिकारी चंपावत की निगरानी में गठित टीम को निष्पक्ष और गहन जांच के निर्देश दिए गए। एसपी स्वयं पीड़िता से मिलीं, घटनास्थल का निरीक्षण किया और स्थानीय लोगों से बातचीत कर पूरे घटनाक्रम की जानकारी जुटाई। पुलिस टीम ने मौके से साक्ष्यों को सुरक्षित किया और रुद्रपुर स्थित आरएफएसएल फील्ड यूनिट को बुलाकर वैज्ञानिक परीक्षण कराया। साथ ही पीड़िता का मेडिकल परीक्षण कराया गया, चाइल्ड वेलफेयर कमेटी के समक्ष काउंसिलिंग कराई गई और न्यायालय में बयान दर्ज कराए गए। नाबालिग की सुरक्षा और देखरेख के लिए प्रशासन की ओर से मजिस्ट्रेट भी नियुक्त किया गया। जांच के दौरान पुलिस ने घटनास्थल से जुड़े सीसीटीवी फुटेज, मोबाइल कॉल डिटेल रिकॉर्ड, लोकेशन डेटा और अन्य डिजिटल साक्ष्यों का विश्लेषण किया। पुलिस के मुताबिक विवेचना में कई ऐसे तथ्य सामने आए जो शुरुआती आरोपों से मेल नहीं खाते। पुलिस जांच में सामने आया कि घटना वाले दिन नाबालिग एक विवाह समारोह में अपनी इच्छा से अपने दोस्त के साथ गई थी। सीसीटीवी फुटेज और तकनीकी साक्ष्यों से उसके विभिन्न स्थानों पर आने-जाने की पुष्टि हुई। वहीं मेडिकल परीक्षण में किसी प्रकार की बाहरी या अंदरूनी चोट, संघर्ष या जबरदस्ती के स्पष्ट संकेत नहीं मिले। विवेचना के दौरान कुछ गवाहों के बयान भी तकनीकी साक्ष्यों से मेल नहीं खाए। पुलिस का कहना है कि कई परिस्थितिजन्य तथ्य कथित घटना की पुष्टि नहीं करते। जांच में

कांग्रेस नेताओं ने चंपावत में धरना-प्रदर्शन किए और देहरादून में भी सरकार के खिलाफ मोर्चा खोला

मामले के शुरुआती खुलासे के बाद प्रदेश में राजनीतिक माहौल भी गर्म हो गया था। कांग्रेस नेताओं ने चंपावत में धरना-प्रदर्शन किए और देहरादून में भी सरकार के खिलाफ मोर्चा खोला। कई महिला संगठनों और छात्र संगठनों ने आरोपियों की गिरफ्तारी और फास्ट ट्रैक जांच की मांग उठाई। सोशल मीडिया पर भी मामला तेजी से वायरल हुआ और लोगों ने कठोर कार्रवाई की मांग की।

हालांकि अब पुलिस की नई जांच रिपोर्ट सामने आने के बाद पूरे घटनाक्रम ने अलग दिशा पकड़ ली है। पुलिस मुख्यालय का कहना है कि जांच पूरी तरह वैज्ञानिक और निष्पक्ष तरीके से की जा रही है ताकि किसी निर्दोष व्यक्ति को प्रताड़ित न होना पड़े और वास्तविक दोषियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित हो सके। पुलिस के अनुसार जांच में "मोडस ऑपरेंडी" के तौर पर यह बात सामने आई है कि कमल रावत ने बदले की भावना से प्रेरित होकर कथित षड्यंत्र रचा। आरोप है कि उसने नाबालिग को बहला-फुसलाकर पूरे घटनाक्रम को एक सुनियोजित तरीके से अंजाम दिया ताकि व्यक्तिगत दुश्मनी निकाली जा सके। फिलहाल पुलिस डिजिटल और फॉरेंसिक साक्ष्यों की विस्तृत जांच कर रही है। संबंधित लोगों से पूछताछ जारी है और अन्य तकनीकी प्रमाण जुटाए जा रहे हैं। पुलिस ने साफ कहा है कि यदि जांच में आरोप भ्रामक या मनगढ़ंत पाए जाते हैं तो संबंधित लोगों के खिलाफ कानून के तहत सख्त कार्रवाई की जाएगी।

उत्तराखंड पुलिस ने यह भी दोहराया कि महिला और बाल अपराधों के मामलों में "जीरो टॉलरेंस" की नीति अपनाई जाती है। साथ ही यह संदेश भी दिया गया कि झूठे आरोप या भ्रामक सूचनाएं भी कानून की नजर में गंभीर अपराध हैं और ऐसे मामलों में भी कठोर कार्रवाई होगी। अब पूरे प्रदेश की नजर इस हाई-प्रोफाइल मामले की अंतिम जांच रिपोर्ट पर टिकी हुई है। एक ओर जहां शुरुआती आरोपों ने समाज और राजनीति में भारी उबाल पैदा किया, वहीं अब पुलिस की जांच ने कई नए सवाल खड़े कर दिए हैं। आने वाले दिनों में फॉरेंसिक रिपोर्ट और आगे की विवेचना इस मामले की तस्वीर पूरी तरह साफ कर सकती है। वहीं विरोध प्रदर्शनों के बीच मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की ओर से इस मामले पर कोई अलग विस्तृत सार्वजनिक बयान सामने नहीं आया है, लेकिन सरकार पहले से महिला अपराधों पर 'जीरो टॉलरेंस' नीति की बात दोहराती रही है। वहीं पुलिस मुख्यालय ने भी साफ किया है कि महिला एवं बाल अपराधों के मामलों में किसी भी स्तर पर लापरवाही नहीं बरती जाएगी और निष्पक्ष जांच के आधार पर ही कार्रवाई होगी।

यह भी सामने आया कि कमल रावत नामक व्यक्ति, पीड़िता और उसकी महिला मित्र के बीच घटना के दिन असामान्य रूप से कई बार बातचीत हुई थी। पुलिस इसे पूरे घटनाक्रम से जुड़ा अहम संकेत मान रही है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह सामने आया कि जिन तीन लोगों को नामजद किया गया था, विनोद सिंह रावत, नवीन सिंह रावत और पूरन सिंह रावत उनकी मौजूदगी कथित घटनास्थल पर नहीं पाई गई। पुलिस का दावा है कि तकनीकी साक्ष्य और गवाहों के बयानों से यह स्पष्ट हुआ कि घटना के समय तीनों आरोपी मौके पर थे ही नहीं।

सीएसआईआर-आईआईपी, देहरादून में राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा महोत्सव-2026

8 मई 2026 को सीएसआईआर- भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून ने राष्ट्रीय बौद्धिक सम्पदा दिवस (आरबीएसएम 2026) मनाया। यह महोत्सव 2023 से मनाया जाता है और *"आजादी का अमृत महोत्सव"* का एक हिस्सा है। इसका मुख्य उद्देश्य बौद्धिक सम्पदा और आईपी जागरूकता को बढ़ावा देना है। इस महोत्सव मे आईआईपी के शोध छात्रों और कर्मचारियों ने भारी संख्या मे भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना से हुई। इसके बाद सीएसआईआर-आईआईपी (आईपीएम ग्रुप) के प्रभारी डॉ. डीवी नाइक तथा पीपीसी के अध्यक्ष डॉ. मैती ने अपने शुरुआती वक्तव्य दिया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. शिखा तेजस्वी, पेटेंट अटॉर्नी ने अपने वक्तव्य मे "भारतीय पेटेंट आवेदन दाखिल करने के दौरान मसौदा तैयार करने और दावों का महत्व" उजागर किया और डॉ. कपिल आर्य सीएसआईआर-इनोवेशन प्रोटेक्शन यूनिट, नई दिल्ली ने *''फ्यूलिंग इनोवेशन: द रोल ऑफ इंटेलेक्चुअल"* पे अपने विचार सांझा किए। इसके बाद 6 मई 2026 को आयोजित IP प्रतियोगिता के विजेताओंकों स्मृति चिन्ह और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ज्योति पोरवाल ने किया तथा हेमंत कुलकर्णी, मुख्य वैज्ञानिक ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

सुनहरा वटवृक्ष है आजादी के दीवानों का मंदिर!

डॉ श्रीगोपाल नारसन एडवोकेट

महानगर रुड़की का भू भाग चुका सुनहरा गांव में मौजूद ऐतिहासिक वट वृक्ष ब्रिटिश हुकूमत के जुल्म का आज भी साक्षी बना हुआ है। अंग्रेजों के खिलाफ आवाज उठाने वाले 152 क्रांतिकारियों को एक ही दिन में इस वट वृक्ष पर सरेआम लटकाकर फांसी दे दी गई थी।

सन 1857 की क्रांति को भले ही देश की आजादी की पहली क्रांति कहा जाता हो, लेकिन अंग्रेजी शासन के समय के गजेटियर के मुताबिक रुड़की में इस क्रांति की ज्वाला सन 1822 में ही भड़क गई थी और जब हालात असहनीय हो गए तो अक्तूबर सन 1824 को कुंजा ताल्लुका में राजा विजय सिंह के नेतृत्व में अंग्रेजों के खिलाफ पहला युद्ध हुआ था। इस दौरान अंग्रेजों को भारी क्षति भी उठानी पड़ी थी। जिससे गुस्साए अंग्रेजों के कोपभाजन का शिकार हुए 152 स्वतंत्रता सेनानियों ने देश की आजादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे।

सन 1822 से क्रांति का बिगुल बजना शुरू हुआ तो ब्रिटिश हुकूमत में खलबली मच गई थी। आजादी के मतवालों को सबक सिखाने के लिए अंग्रेजों ने इलाके में कत्लेआम का तांडव मचाया था। इसके बाद रुड़की के तत्कालीन ज्वॉइंट मजिस्ट्रेट सर राबर्ट्सन ने 10 मई 1857 को रामपुर, कुंजा, मतलबपुर आदि गांवों के 152 ग्रामीण आंदोलनकारियों को पकड़कर इस पेड़ पर सरेआम फांसी पर लटका दिया था।

यह ऐतिहासिक वट वृक्ष 500 साल से अधिक समय से ब्रिटिश हुकूमत के जुल्म का साक्षी बनकर खड़ा हुआ है। स्थानीय लोगों की पहल के बाद वट वृक्ष को शहीद स्मारक के रूप में स्थापित किया गया है, जो स्वतंत्रता संग्राम में रुड़की के शौर्य का प्रतीक है। ऐतिहासिक दस्तावेजों में यह भी उल्लेख है कि ब्रिटिश हुकूमत के खौफ के चलते आसपास के लोग गांव छोड़कर चले गए थे। सन 1910 में स्वतंत्रता सेनानी स्व. ललिता प्रसाद ने इस वटवृक्ष के आसपास की जमीन को खरीदकर इसे आबाद किया था। उसके बाद यहां मंत्राचरणपुर गांव बसाया गया, जो बाद में सुनहरा के नाम से जाना गया है। इस ऐतिहासिक स्वतंत्रता संग्राम की पावन स्थली पर शहीदों को नमन करने के लिए एक कमेटी का गठन भी किया गया था। शहीदी यादगार कमेटी ने वटवृक्ष के नीचे शहीद हुए आजादी के दीवानों की याद में 10 मई 1957 को स्वतंत्र भारत में पहली बार विशाल सभा तत्कालीन एसडीएम बीएस जुमेल की अध्यक्षता में हुई थी। जिसमें शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई थी। ब्रिटिश हुकूमत ने सामुहिक फांसी का कदम इसलिए उठाया था ताकि रुड़की के लोग भयभीत हो जाएं और अंग्रेजों के खिलाफ आवाज न उठा सकें, जिससे आसानी से रुड़की और सहारनपुर में मौजूद छावनी से ब्रिटिश फौज को दूसरी जगह भेजा जा सके। सन 1947 में जब देश आजाद हुआ, तब तक इस पेड़ पर लोहे के कुंडे एवं जंजीरें लटकी हुई थीं, जो बाद में धीरे धीरे गायब हो गई। हालांकि जंजीरों के निशान पेड़ की टहनियों पर बाद तक भी मौजूद रहे। यह वटवृक्ष आजादी के आंदोलन व शहीदों के बलिदान का मंदिर बन गया है। लेकिन बदलते दौर में यह वटवृक्ष उपेक्षा की भेंट चढ़ता जा रहा है। प्रशासनिक उपेक्षा के चलते ऐतिहासिक वट वृक्ष जिसका सौन्द्रियकण उत्तराखंड सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा तत्कालीन नारायण दत्त तिवारी सरकार के समय कराया गया, के आसपास का क्षेत्र केएल पालीटेक्निक का छात्रावास परिसर होने के कारण यह शहीद स्मारक घोर उपेक्षा का शिकार है। पालीटेक्निक प्रबंधन द्वारा मुख्य द्वार पर ताला जड़ देने के कारण लोग चाहकर भी शहीद स्मारक तक नही पहुंच पाते है, वही शहीद स्मारक के आसपास की भूमि पर तारबाड़ कर देने से भी शहीद स्मारक का रास्ता संकीर्ण हो गया है। साथ ही शहीद स्मारक स्थल पर भी लोगो ने धर्म की आड़ में नाजायज कब्जे कर लिए है। स्वतंत्रता सेनानी उत्तराधिकारी परिवार के लोग हर माह के प्रथम रविवार को दस बजे दस मिनट अपने पूर्वजो के नाम कार्यक्रम करके शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते है,उन्हें भी शहीद स्मारक तक पहुंचने में परिसर पर ताला लगा होने के कारण भारी परेशानी होती है। जिसे लेकर कई बार प्रशासनिक स्तर पर भी स्वतंत्रता सेनानी परिवारों द्वारा शिकायत की गई। स्वतंत्रता सेनानी उत्तराधिकारी कांग्रेस प्रकोष्ठ के प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेंद्र सैनी ने उक्त शहीद स्मारक को अतिक्रमण मुक्त कराने व इसके द्वार नियमो के मुताबिक 24 घण्टे खुले रखने व तार बाड हटाने की मांग की है। वही ज्वाइंट मजिस्ट्रेट से लेकर मुख्यमंत्री पोर्टल तक शिकायत उक्त बाबत शिकायत की गई है, लेकिन यह शिकायत भी नोकरशाही की भेंट चढ़ गई है। हालांकि पिछले दिनों रुड़की के ज्वाइंट मजिस्ट्रेट दीपक रामचंद्र सेट ने शहीद स्थल का दौरा कर यहां के हालात जाने है।

(लेखक अमर शहीद जगदीश प्रसाद वत्स के भांजे एवं वरिष्ठ पत्रकार है)

इंडी गठबंधन में बिखराव का खतरा

विपक्ष के लिए आत्ममंथन का समय

ललित गर्ग

भारतीय लोकतंत्र में सत्ता और विपक्ष दोनों की अपनी-अपनी अनिवार्य भूमिकाएं हैं। जहां सत्ता नीतियों का निर्माण और क्रियान्वयन करती है, वहीं विपक्ष उन नीतियों की समीक्षा, संतुलन और वैकल्पिक दृष्टि प्रस्तुत करता है। लेकिन जब विपक्ष स्वयं ही असंगठित, दिशाहीन और अंतर्विरोधों से ग्रस्त हो जाए, तब लोकतांत्रिक संतुलन भी प्रभावित होता है। हाल के पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु सहित अन्य राज्यों के चुनाव परिणामों ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि विपक्षी एकता का दावा करने वाला गठबंधन अपने भीतर ही गंभीर संकट से गुजर रहा है। पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस की पराजय और तमिलनाडु में द्रमुक की स्थिति ने विपक्षी खेमे को झकझोरने का काम किया है। यह केवल चुनावी हार नहीं है, बल्कि रणनीतिक विफलता का भी संकेत है और यह प्रश्न भी खड़ा करता है कि क्या विपक्ष केवल भाजपा-विरोध के आधार पर टिक सकता है या उसे एक ठोस वैचारिक और नीतिगत आधार की भी आवश्यकता है। भारतीय लोकतंत्र की सुदृढ़ता केवल सत्तापक्ष की नीतियों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि एक सजग, विवेकशील और रचनात्मक विपक्ष पर भी उतनी ही आधारित होती है। विपक्ष का मूल दायित्व केवल आलोचना करना नहीं, बल्कि एक वैकल्पिक दृष्टि प्रस्तुत करना, नीतियों की खामियों को तथ्यों के आधार पर उजागर करना और जनहित के मुद्दों को प्रभावी ढंग से संसद एवं समाज के समक्ष रखना है। एक स्वस्थ लोकतंत्र में विपक्ष सरकार का विरोधी नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक संतुलन का संरक्षक होता है। उसे विकास कार्यों में सहयोग करते हुए यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शासन पारदर्शी, जवाबदेह और जनोन्मुखी बना रहे। दुर्भाग्यवश, पिछले दो दशकों में विपक्ष का एक बड़ा वर्ग इस रचनात्मक भूमिका से भटकता दिखाई दिया है, जहां नीतिगत बहसों की जगह व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोप और राजनीतिक शोर-शराबा अधिक प्रमुख हो गया है।

इंडिया गठबंधन का गठन एक बड़े राजनीतिक उद्देश्य के साथ हुआ था-भाजपा के वर्चस्व को चुनौती देना। प्रारंभिक स्तर पर यह प्रयास कुछ हद तक सफल भी दिखाई दिया, जब इस गठबंधन ने भाजपा को पूर्ण बहुमत से दूर रखने में भूमिका निभाई, लेकिन समय के साथ यह स्पष्ट होता गया कि यह गठबंधन वैचारिक एकता से अधिक राजनीतिक अवसरवाद पर आधारित है। गठबंधन की सबसे बड़ी कमजोरी उसका आंतरिक समन्वय है, जहां विभिन्न दलों के अपने-अपने क्षेत्रीय हित, नेतृत्व की महत्वाकांक्षाएं और अलग-अलग राजनीतिक एजेंडे अक्सर एक-दूसरे से टकराते हैं। सीट बंटवारे से लेकर नेतृत्व के प्रश्न तक, हर स्तर पर मतभेद सामने आते रहे हैं, जिससे यह स्थिति बनती है कि केवल एक साझा विरोध के आधार पर गठबंधन को स्थायी नहीं बनाया जा सकता। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और शिवसेना (यूबीटी) की नेता प्रियंका चतुर्वेदी जैसे प्रमुख चेहरों के बीच जिस तरह की बयानबाजी सामने आई है, वह गठबंधन की आंतरिक स्थिति को और अधिक उजागर करती है। सार्वजनिक मंचों पर एक-दूसरे की आलोचना करना न केवल राजनीतिक परिपक्वता की कमी को दर्शाता है, बल्कि कार्यकर्ताओं और मतदाताओं के बीच भी भ्रम की स्थिति पैदा करता है। राजनीति में मतभेद स्वाभाविक हैं, लेकिन उन्हें व्यक्त करने का तरीका और मंच भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि जब गठबंधन के नेता ही एक-दूसरे के खिलाफ बयान देने लगें, तो यह संदेश जाता है कि गठबंधन केवल नाम का है और वास्तविकता में वह बिखराव की ओर बढ़ रहा है।

महिला आरक्षण विधेयक पर विपक्ष का रुख भी उसकी रणनीतिक कमजोरी को उजागर करता है। यह विधेयक भारतीय समाज की आधी आबादी से जुड़ा एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय था, लेकिन इसका विरोध जिस रूप में सामने आया, उसने विपक्ष की स्थिति को कमजोर किया। विरोध करना लोकतांत्रिक अधिकार है, लेकिन

उसका स्वरूप रचनात्मक होना चाहिए था। यदि विपक्ष इस विधेयक में सुधार के सुझाव देता, उसके क्रियान्वयन की समय-सीमा और प्रक्रिया पर सवाल उठाता, तो वह अधिक प्रभावी और विश्वसनीय बन सकता था, लेकिन सीधे विरोध में खड़ा होना, वह भी बिना स्पष्ट जनसंदेश के यह दर्शाता है कि विपक्ष मुद्दों को समझने और उन्हें सही तरीके से प्रस्तुत करने में चूक कर रहा है। इसका प्रभाव विशेष रूप से महिला मतदाताओं पर पड़ा, जिन्होंने इसे अपने अधिकारों के विस्तार के रूप में देखा और इसी का राजनीतिक लाभ भाजपा ने अपनी रणनीति के माध्यम से उठाया। भारतीय जनता पार्टी की सबसे बड़ी ताकत उसकी आत्मसमीक्षा और सुधार की क्षमता रही है। हार के बाद भी वह अपने संगठन, नेतृत्व और रणनीति में बदलाव करती है, जिससे वह और अधिक मजबूत होकर सामने आती है। इसके विपरीत, विपक्ष अक्सर अपनी हार के कारणों को बाहरी परिस्थितियों में खोजता है, जिससे वह अपनी कमजोरियों को पहचानने और उन्हें दूर करने में असफल रहता है। राजनीति में परिपक्वता का अर्थ है हार को स्वीकार करना, उससे सीखना और भविष्य के लिए बेहतर रणनीति बनाना, लेकिन इस दिशा में विपक्ष को अभी लंबा रास्ता तय करना है।

विपक्षी गठबंधन के भीतर सबसे बड़ा संकट हितों का टकराव है, जहां हर दल अपने क्षेत्रीय आधार को मजबूत करने की कोशिश करता है और इसी प्रक्रिया में वह अपने सहयोगी दलों से भी प्रतिस्पर्धा करने लगता है। पश्चिम बंगाल, दिल्ली, बिहार और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में यह द्वंद्व स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जहां सहयोग और प्रतिस्पर्धा एक साथ चलते हैं और अंततः यही स्थिति बिखराव को जन्म देती है। जब तक गठबंधन के भीतर स्पष्ट भूमिका निर्धारण, न्यूनतम साझा कार्यक्रम और नेतृत्व की स्वीकृति नहीं होगी, तब तक यह टकराव समाप्त नहीं होगा। विपक्षी दलों की यह नाकामी केवल रणनीतिक कमजोरी नहीं, बल्कि उनके नेतृत्व की मंशा और प्राथमिकताओं पर भी प्रश्नचिह्न खड़ा करती है। जब विपक्ष जनहित के मुद्दों को छोड़कर सत्ता प्राप्ति के लिए अवसरवादी गठजोड़, भ्रामक प्रचार और व्यक्तिगत हमलों का सहारा लेता है, तब वह अपनी नैतिक विश्वसनीयता खो देता है। लोकतंत्र में विपक्ष का दायित्व जनभावनाओं का सच्चा प्रतिनिधित्व करना और सरकार को सही दिशा में प्रेरित करना है, न कि केवल विरोध के लिए विरोध करना। आज आवश्यकता इस बात की है कि विपक्ष अपने आचरण और दृष्टिकोण में सुधार लाए, सिद्धांतों और मूल्यों पर आधारित राजनीति को पुनर्जीवित करे तथा जनता के विश्वास को पुनः अर्जित करे। तभी भारतीय लोकतंत्र वास्तविक अर्थों में मजबूत और संतुलित बन सकेगा।

आज आवश्यकता इस बात की है कि विपक्ष स्वयं को पुनर्गठित करे, अपनी वैचारिक स्पष्टता स्थापित करे और जनता के सामने एक सकारात्मक एवं ठोस विकल्प प्रस्तुत करे। केवल विरोध की राजनीति अब पर्याप्त नहीं है, बल्कि जनहित के मुद्दों पर स्पष्ट दृष्टिकोण और व्यवहारिक समाधान भी आवश्यक हैं। आंतरिक मतभेदों को सार्वजनिक करने के बजाय संवाद के माध्यम से सुलझाना होगा और जनता के बदलते मिजाज को समझते हुए अपनी रणनीति को नया स्वरूप देना होगा। भारतीय राजनीति एक ऐसे दौर में पहुंच चुकी है, जहां मतदाता अधिक सजग और निर्णायक हो चुका है। ऐसे में गठबंधन की राजनीति को केवल संख्या के खेल से आगे बढ़कर विश्वास, समन्वय और स्पष्टता की नींव पर खड़ा होना होगा। बिखराव केवल राजनीतिक शक्ति को ही कमजोर नहीं करता, बल्कि लोकतंत्र के संतुलन को भी प्रभावित करता है। अंततः राजनीति में वही सफल होता है जो समय के साथ सीखता है, बदलता है और स्वयं को बेहतर बनाता है। "हार को पचाना और उससे सीख लेना" केवल एक कहावत नहीं, बल्कि सफल राजनीति का मूलमंत्र है, जिसे भाजपा ने बार-बार सिद्ध किया है और अब विपक्ष के सामने भी यही चुनौती है कि वह इस मूलमंत्र को अपनाकर अपने बिखराव को शक्ति में बदल पाए या फिर आंतरिक संघर्षों में उलझकर अपनी प्रासंगिकता खोता जाए।

नालंदा विश्वविद्यालय ने दी डॉ. श्रीगोपाल नारसन को उपभोक्ता कानून में मानद डॉक्टरेट

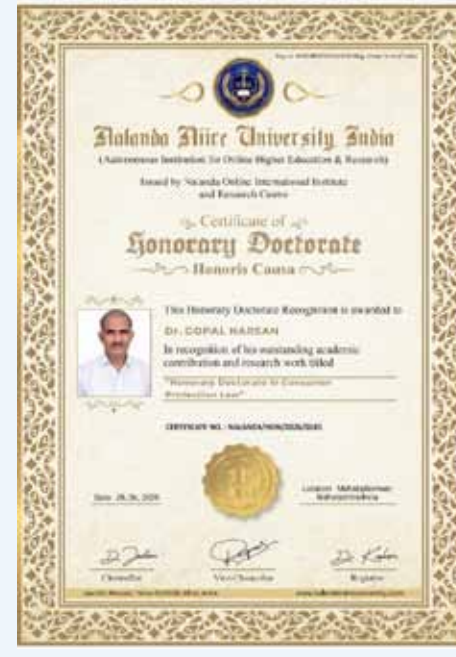

रुड़की-नालंदा एनआईआईआरसी विश्वविद्यालय बिहार ने उपभोक्ता मामलों के विशेषज्ञ अधिवक्ता एवं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. श्रीगोपाल नारसन को उपभोक्ता कानून में मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की है। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति, कुलपति व कुलसचिव द्वारा अपने हस्ताक्षरों से जारी इस मानद उपाधि को प्रदान करने का आधार श्रीगोपाल नारसन की उपभोक्ता हितों के प्रति जनजागरूकता व उपभोक्ता कानून के प्रति विद्वता माना गया है।

विदित हो नारसन विगत 35 वर्षो से उपभोक्ता जनजागरूकता आंदोलन से जुड़े है और जागो ग्राहक जागो का संदेश जनसामान्य को देते रहे है। वे उत्तराखंड में राज्य उपभोक्ता आयोग के वरिष्ठ अधिवक्ता भी है। अभी तक विभिन्न साहित्यिक विधाओं में 22 पुस्तकें लिख चुके श्रीगोपाल नारसन की साहित्य संस्थान गाजियाबाद से एक नई पुस्तक 'वरदान है उपभोक्ता कानून' प्रकाशित की जा रही है।

उत्तराखण्ड शासन
देवभूमि रजत उत्सव
उत्तराखण्ड की माटी में जन्मे,
भारत माँ के वीर सपूत
पेशावर कांड के नायक
स्व. वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली जी
तथा उनके साथियों को
पेशावर कांड की वर्षगांठ पर
प्रदेशवासियों की ओर से
॥ शत्-शत् नमन ॥
सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी
Website: www.uttarainformation.gov.in
UttarakhandDIPR
DIPR_UK

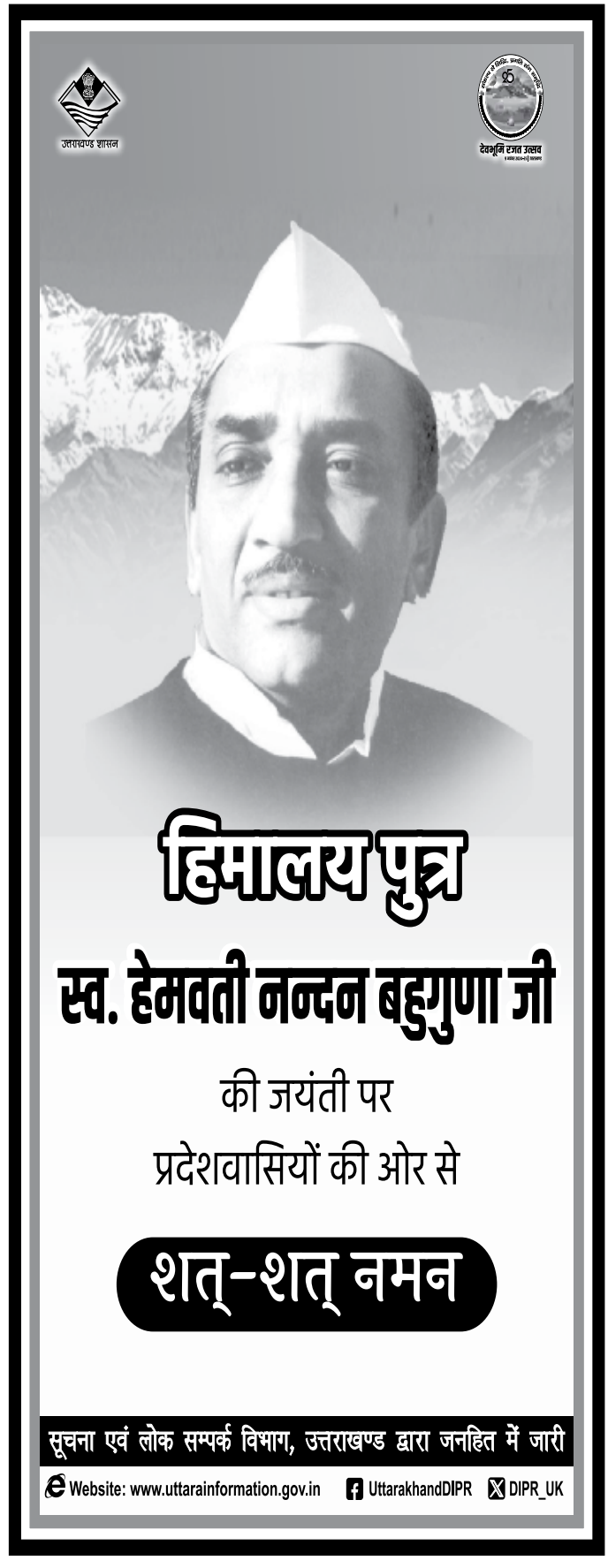
उत्तराखण्ड शासन
देवभूमि रजत उत्सव
हिमालय पुत्र
स्व. हेमवती नन्दन बहुगुणा जी
की जयंती पर
प्रदेशवासियों की ओर से
शत्-शत् नमन
सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी
Website: www.uttarainformation.gov.in
UttarakhandDIPR
DIPR_UK

जानिए कैसा होगा आपका यह सप्ताह

पं. दीपक प्रसाद, शास्त्री (मो. 9557730042)
(ज्योतिष, कर्मकाण्ड, धर्मिक अनुष्ठान आदि)

मेष राशि- प्रभावशाली लोगों से मुलाकात होगी और संपर्क दायरा बढ़ेगा। कोई रुका हुआ पैसा वसूल करने के लिए समय अनुकूल है, इसलिए इन कामों के लिए प्रयास करते रहें। विद्यार्थियों को किसी विषय को लेकर चल रही समस्या का समाधान मिल जाएगा। युवाओं को अपने काम पर फोकस रखना होगा, क्योंकि सफलता इसी पर निर्भर करेगी।

वृषभ राशि- किसी भी गतिविधि में प्रैक्टिकल नजरिया रखना आपको मन मुताबिक परिणाम देगा। आप अन्य गतिविधियों के लिए भी समय निकाल लेंगे। प्रॉपर्टी की खरीद-फरोख्त से जुड़े मामलों में सफलता मिलेगी। घर में किसी प्रिय मित्र का आगमन होगा। परिवार के साथ मनोरंजक यात्रा भी संभव है। किसी मित्र का अपने वादे से मुकर जाना आपको तनाव दे सकता है।

मिथुन राशि- कुछ जिम्मेदारियां आपकी राह देख रही हैं और आप उन्हें अच्छी तरह निभा भी लेंगे। रूटीन से हटकर कुछ खास गतिविधियों में दिलचस्पी बनी रहेगी। मकान या जमीन से जुड़े रुके हुए काम आगे बढ़ने की संभावना है। धार्मिक कामों में भी रुचि रहेगी। किसी भी काम को कल पर न छोड़ें और भाग्य के भरोसे रहने के बजाय अपने प्रयास जारी रखें।

कर्क राशि- पिछले कुछ समय से चल रही अस्वस्थता में कुछ सुधार महसूस होगा और आप भरपूर ऊर्जा महसूस करेंगे। परिवार से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण फैसले लेने पड़ सकते हैं, लेकिन ये फैसले सकारात्मक रहेंगे। जरूरत पड़ने पर नजदीकी लोगों से उचित मदद भी मिल सकती है। अपने उत्साह में कमी न आने दें और खुशनुमा लोगों के साथ मेलजोल बनाए रखें।

सिंह राशि- कामकाज का दबाव बना रहेगा, लेकिन इसके बेहतर परिणाम मिलने से थकान दूर हो जाएगी और मन प्रसन्न रहेगा। असरदार लोगों से मेल-मुलाकात होगी। उनका मार्गदर्शन आपके लिए आशीर्वाद की तरह रहेगा। परिवार की व्यवस्था को लेकर कोई बड़ा फैसला हो सकता है। भाइयों और रिश्तेदारों के साथ संबंध मजबूत बनाए रखने में आपकी भूमिका महत्वपूर्ण रहेगी।

कन्या राशि- किसी महत्वपूर्ण काम पर पैसा लगाने की सोच रहे हैं, तो तुरंत निर्णय लें। घर में भी साज-सज्जा से जुड़े किसी बदलाव की योजना बन सकती है। महिलाएं पूरी तन्मयता के साथ सभी गतिविधियों को आसानी से व्यवस्थित करने में सफल रहेंगी। कुछ आलस और सुस्ती की स्थिति बनी रहेगी। वर्तमान वातावरण का दुष्प्रभाव स्वास्थ्य को प्रभावित करेगा।

तुला राशि- आपकी कोई समस्या किसी दोस्त के माध्यम से दूर होने वाली है। इससे राहत मिलेगी। कठिन काम को भी आप अपनी इच्छाशक्ति और दृढ़ निश्चय से पूरा करेंगे। अपनी पर्सनैलिटी को और निखारने के लिए व्यायाम करें, इससे फायदा होगा। किसी भी तरह की नकारात्मकता से खुद को बचाना होगा। फिलहाल किसी भी यात्रा को टालने का प्रयास करें

वृश्चिक राशि- घर में नजदीकी संबंधियों की आवाजाही रहेगी। आपस में समय बिताकर सभी को खुशी महसूस होगी। घर और व्यवसाय दोनों जगह उचित तालमेल बनाकर रखने में आपका प्रयास सफल रहेगा। किसी भी विशेष मुद्दे पर बातचीत करते समय अशिष्ट शब्दों का प्रयोग न करें। खांसी, जुकाम और बदन दर्द की समस्या रह सकती है।

धनु राशि- जो काम पिछले काफी समय से रुके हुए थे, वे थोड़े प्रयास से ही पूरे हो सकते हैं। राजनीतिक या सामाजिक संपर्कों के माध्यम से भी आपको सहयोग मिलेगा। भाइयों के साथ चल रहे किसी विवाद को आपसी तालमेल से सुलझाने का प्रयास करें। दूसरों से सलाह लेने के बजाय अपनी क्षमता पर विश्वास करें, वरना लक्ष्य से भटक सकते हैं।

मकर राशि- कुछ न कुछ दिक्कतें रहेंगी, लेकिन ईश्वर की कृपा से कोई न कोई रास्ता मिल ही जाएगा। सक्रिय रहने से कोई भी फैसला लेने में आसानी होगी। अगर प्रॉपर्टी या मूल्यवान वस्तु की खरीद-फरोख्त से जुड़ी योजना है, तो उस पर काम शुरू कर सकते हैं। बेवजह दूसरों के साथ उलझने और हस्तक्षेप करने से आपका मान-सम्मान प्रभावित हो सकता है।

कुंभ राशि- सकारात्मक विचार बने रहेंगे और आप पूरी ऊर्जा से अपनी गतिविधियां व्यवस्थित रखेंगे। खास लोगों से मुलाकात का अवसर मिलेगा। सामाजिक और सोसाइटी से जुड़ी गतिविधियों में भी सक्रियता बनाए रखें। वित्तीय मामलों में हिसाब-किताब करते समय कुछ गलतियां हो सकती हैं। खान-पान के प्रति लापरवाही से पेट से जुड़ी समस्या बढ़ सकती है।

मीन राशि- हर काम को सलीके और व्यवस्थित तरीके से करने पर जल्दी ही लक्ष्य हासिल कर लेंगे। इससे अपने अंदर भरपूर ऊर्जा और आत्मविश्वास महसूस करेंगे। परिवार के साथ शॉपिंग आदि में भी समय बीतेगा। दूसरों से मदद लेने के बजाय अपनी क्षमताओं पर विश्वास रखें। कहीं भी वाद-विवाद की स्थिति बनने पर अपने गुस्से और शब्दों पर काबू रखें।

एक्ट्रेस जिसके बाथरूम से निकली नोटों की गड्डियां, कोर्ट में खुलेआम कहा था- 'जिस्मफरोशी से कमाए हैं पैसे'

50 से 60 के दशक तक में हिंदी सिनेमा में एक ऐसी अभिनेत्री थी, जो करीब-करीब हर फिल्म निर्माता की पहली पसंद बन चुकी थी। अपने करियर में इस एक्ट्रेस ने राजेश खन्ना, धर्मेंद्र, मनोज कुमार जैसे सुपरस्टार्स के साथ काम किया और अपने नाम का सिक्का चलाया। इनकी खूबसूरती, दिलकश अदाओ और शानदार अभिनय ने इन्हें सबके पसंदीदा बना दिया था। यहां बात हो रही है माला सिन्हा की, वही माला सिन्हा जिन्होंने 'परवरिश', 'बादशाह', 'नया जमाना', 'धूल का फूल' जैसी फिल्मों में काम किया और उन पर फिल्माया गाना 'आपकी नजरों ने समझा, प्यार के काबिल मुझे' तो आज भी लोगों की जुबान पर रहता है। एक समय था जब माला सिन्हा दर्शकों की फेवरेट थीं, लेकिन कहते हैं न समय और किस्मत हमेशा एक सी नहीं रहती। ऐसे ही माला सिन्हा ने भी बुलंदियों के बाद ऐसा समय भी देखा, जब उनका नाम विवादों में घिर चुका था। उनकी छवि दांव पर थी और साथ ही साथ निजी जिंदगी भी।

एक विवाद ने किया बर्बाद

1992 में माला सिन्हा को पद्मश्री से सम्मानित किया जा चुका है। लेकिन शोहरत की बुलंदी पर पहुंचने के बाद उनकी जिंदगी में एक ऐसा मोड़ भी आया, जिसने सभी को हैरान कर दिया और हर तरफ उनका नाम खराब हो गया। आईटी के एक छापे के बाद माला सिन्हा ने कोर्ट में कुछ ऐसा कह दिया कि हर कोई चौंक गया। 1964 में माला सिन्हा के घर पर आईटी यानी इनकम टैक्स विभाग का छापा पड़ा था, जिसमें उनके घर की बाथरूम की दीवारों से नोटों की गड्डियां निकली थीं। करीब 12 लाख की रकम, जो उन दिनों असाधारण थी। ये मामला कोर्ट तक पहुंचा और खुद को बचाने के लिए माला सिन्हा ने यहां तक कह दिया उन्होंने ये पैसे जिस्मफरोशी से कमाया है और उनके इस बयान ने पूरे देश में हलचल मचा दी।

क्या था सच?

इस विवाद के बाद माला सिन्हा ने इसके पीछे का बयां किया था। उन्होंने बताया था कि कानूनी सलाह के चलते उन्होंने ये बयान दिया, ताकि वह सजा से बच सकें। माला सिन्हा के अनुसार, उनके वकीलों ने ये सलाह दी थी कि अगर वह ये बयान देती हैं तो अवैध संपत्ति और टैक्स चोरी से बच सकती हैं। हालांकि, ये बयान उन्हीं के ऊपर भारी पड़ गया और उनकी छवि बुरी तरह खराब हो गई। निर्माताओं ने उनसे किनारा कर लिया और उन्हें काम मिलना बंद हो गया।

माला सिन्हा का असली नाम

माला सिन्हा की पर्सनल लाइफ की बात करें तो उनका असली नाम माला नहीं बल्कि माल्डा सिन्हा था। लेकिन, उनके क्लासमेट अक्सर उन्हें डालडा कहकर चिढ़ाते थे, जिसके चलते उन्होंने अपना नाम ही बदल दिया। माला सिन्हा ने नेपाली अभिनेता चिदंबर प्रसाद लोहानी से शादी की और वो भी एक नहीं तीन-तीन बार। दोनों ने पहले कोर्ट मैरिज की, फिर ईसाई रीति-रिवाज से और फिर पारंपरिक हिंदू रीति रिवाज से। माला सिन्हा की ही तरह उनकी बेटी प्रतिभा सिन्हा ने भी अभिनय की दुनिया में एंट्री की, लेकिन अपनी मां जैसी सफलता को छू तक नहीं सकीं। धीरे-धीरे प्रतिभा ने भी एक्टिंग इंडस्ट्री से दूरी बना ली और सार्वजिनिक इवेंट्स से भी लगभग गायब हो चुकी हैं।

EXPERIENCE HELI TOUR WITH

Himgiri
Aviation & Tourism
SINCE 2018

3N/4D TOUR

A Unit of
दिव्य हिमगिरि

केदार-बद्री यात्रा

BY HELICOPTOR

OPENING DATES

KEDARNATH
22 April, 2026

BADRINATH
23 April, 2026

ADVANCE BOOKING STARTS BOOK NOW

Contact for Reservation 8433456398, 9410353164

Email: himgiritourism@gmail.com
6 Municipal Road, Opp. Oxford School of Excellence, Dalanwala, Dehradun-248001 (UK)

R.N.I.: UTTHIN/2010/41629 | Postal Regd. UA/DO/DDN/01/2025-2027